CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2010 with Solution PDF-Set 2/1

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 100**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 4, 7, 8, 10, 14 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1(क). निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: किस भाँति जीना चाहिए, किस भाँति मरना चाहिए, सो सब हमें निज पूर्वजों से ज्ञात करना चाहिए। पद-चिह्न उनके यत्नपूर्वक खोज लेना चाहिए निज पूर्व गौरव-दीप को बुझने न देना चाहिए। आओ मिलें सब देश-बांधव हार बनकर देश के साधक बनें सब प्रेम से सुख-शांतिय उद्देश्य के। क्या सांप्रदायिक भेद से है ऐक्य मिट सकता, अहो, बनती नहीं क्या एक माला विविध सुमनों की, कहो। प्राचीन हों कि नवीन, छोड़ो रूढ़ियाँ जो हों बुरी, बनकर विवेकी तुम दिखाओ हंस की-सी चातुरी। प्राचीन बातें ही भली हैं — यह विचार अलीक है, जैसी अवस्था हो जहाँ, वैसी व्यवस्था ठीक है। मुख से न होकर चित्त से देशानुरागी हो सदा, हैं सब स्वदेशी बंधु, उनके दुःख-भागी हो सदा। देकर उन्हें साहाय्य भरसक सब विपत्ति व्यथा हरो, निज दुःख से ही दूसरों के दुःख का अनुभव करो। अतीत का गौरव बनाए रखने के लिए कवि हमें क्या परामर्श देता है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में पूर्वजों के आदर्श जीवन से प्रेरणा लेकर राष्ट्रीय गौरव की रक्षा करने का संदेश है।
- प्रश्न का उत्तर पूर्वजों के पदचिह्न खोजने और गौरव का दीप जलाए रखने वाली पंक्तियों से मिलता है।

चरण 1: परामर्श की आधार-पंक्ति पहचानें कवि कहता है कि हमें अपने पूर्वजों से सीखना चाहिए कि कैसे जीना और मरना चाहिए। उनके पदचिह्न यत्नपूर्वक खोजने का अर्थ उनके आदर्शों, त्याग और श्रेष्ठ आचरण को समझना है।

चरण 2: गौरव की रक्षा का उपाय समझें गौरव-दीप बुझने न देने का आशय केवल अतीत की प्रशंसा करना नहीं, बल्कि पूर्वजों के श्रेष्ठ आदर्शों को अपने आचरण में जीवित रखना है। इससे उनके द्वारा अर्जित गौरव की निरंतरता बनी रहती है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि हमें पूर्वजों के पदचिह्न खोजकर उनके आदर्शों का अनुसरण करने तथा अपने अतीत के गौरव का दीप बुझने न देने का परामर्श देता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पूर्वजों के पदचिह्नों का अनुसरण और गौरव-दीप की रक्षा, दोनों बातें जोड़ें।

1(ख). 'विविध सुमनों की एक माला' का उदाहरण कवि ने क्यों दिया है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विभिन्न फूलों की माला देश के विविध समुदायों की एकता का प्रतीक है।
- उदाहरण का अर्थ उसके ठीक पहले आए सांप्रदायिक भेद और ऐक्य के संदर्भ से स्पष्ट होता है।

चरण 1: माला और फूलों का संबंध समझें माला अनेक प्रकार के फूलों से मिलकर बन सकती है। फूलों के रंग, रूप या प्रकार की भिन्नता उन्हें एक सूत्र में जुड़ने से नहीं रोकती। कवि इसी परिचित दृश्य से अपना विचार समझाता है।

चरण 2: उदाहरण को देशवासियों से जोड़ें फूलों की भिन्नता देशवासियों के धर्मों और संप्रदायों की विविधता को सूचित करती है। प्रेम और भाईचारे से वे एक राष्ट्र के रूप में जुड़ सकते हैं; सांप्रदायिक भेद राष्ट्रीय एकता के लिए अनिवार्य बाधा नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि ने यह उदाहरण समझाने के लिए दिया है कि जैसे विविध फूल एक माला बनाते हैं, वैसे ही भिन्न धर्मों और संप्रदायों के लोग प्रेमपूर्वक एक राष्ट्र में एकजुट रह सकते हैं।

त्वरित सुझाव: माला को राष्ट्रीय एकता और विभिन्न फूलों को विविध समुदायों से जोड़कर उदाहरण का उद्देश्य लिखें।

1(ग). उन पंक्तियों को उद्धृत कीजिए जिनमें कहा गया है कि पुराना होने से कोई बात अच्छी नहीं हो जाती, हमें विवेकपूर्वक उनकी परख करनी चाहिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उद्धरण माँगने पर काव्यांश की मूल पंक्तियाँ लिखी जाती हैं, केवल उनका भावार्थ पर्याप्त नहीं होता।
- कवि पुरातनता को अच्छाई की कसौटी मानने के बजाय विवेक और परिस्थितियों के अनुकूलता पर बल देता है।

चरण 1: विवेक का संकेत पहचानें कवि प्राचीन और नवीन, दोनों प्रकार की बुरी रूढ़ियों को छोड़ने की बात कहता है। हंस की चातुरी का संकेत उचित-अनुचित की परख करने की क्षमता की ओर है।

चरण 2: पुरानेपन संबंधी विचार पहचानें अगली पंक्तियाँ स्पष्ट करती हैं कि कोई बात केवल प्राचीन होने से अच्छी नहीं हो जाती। व्यवस्था का औचित्य उस स्थान की अवस्था और आवश्यकता के आधार पर तय होना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष संबंधित पंक्तियाँ हैं:

> प्राचीन हों कि नवीन, छोड़ो रूढ़ियाँ जो हों बुरी,
> बनकर विवेकी तुम दिखाओ हंस की-सी चातुरी।
> प्राचीन बातें ही भली हैं — यह विचार अलीक है,
> जैसी अवस्था हो जहाँ, वैसी व्यवस्था ठीक है।

त्वरित सुझाव: उद्धृत कीजिए वाले प्रश्न में विवेक और प्राचीनता, दोनों संकेतों वाली मूल पंक्तियाँ लिखें।

1(घ). अपने देशवासियों के साथ हमारा व्यवहार कैसा होना चाहिए? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि समस्त देशवासियों को अपना बंधु मानने तथा उनके दुख में सहभागी बनने का संदेश देता है।
- सच्चा देशप्रेम सहानुभूति और यथासंभव सहायता के रूप में व्यवहार में प्रकट होता है।

चरण 1: भाईचारे का भाव पहचानें कवि सभी स्वदेशी लोगों को बंधु कहता है। इसलिए उनके प्रति अपनापन, प्रेम और समानता का व्यवहार होना चाहिए। केवल अपने सुख की चिंता करने से यह संबंध सार्थक नहीं होता।

चरण 2: सहानुभूति को सहायता से जोड़ें अपने दुख के अनुभव से दूसरों की पीड़ा समझनी चाहिए। विपत्ति में उनकी यथाशक्ति सहायता करके उनका कष्ट दूर करने का प्रयास करना ही दुख-भागी होने का व्यावहारिक रूप है।

चरण 3: निष्कर्ष हमें सभी देशवासियों को अपना भाई मानकर प्रेम और सहानुभूति से व्यवहार करना चाहिए तथा उनके दुख और विपत्ति में सहभागी होकर यथासंभव सहायता करनी चाहिए।

त्वरित सुझाव: व्यवहार के उत्तर में भाईचारा, दुख की अनुभूति और वास्तविक सहायता का उल्लेख करें।

1(ङ). आशय स्पष्ट कीजिए — 'मुख से न होकर चित्त से देशानुरागी हो सदा'। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आशय-प्रश्न में शब्दों के सीधे अर्थ के साथ उनका निहित संदेश स्पष्ट करना होता है।
- यहाँ मुख बाहरी कथन और चित्त मन की सच्ची भावना का संकेत देता है।

चरण 1: मुख और चित्त का अंतर समझें केवल मुख से देशप्रेम व्यक्त करने का अर्थ है बड़ी-बड़ी बातें करना या शब्दों में देशभक्ति दिखाना। चित्त से देशानुरागी होना देश के प्रति मन से सच्चा लगाव और निष्ठा रखना है।

चरण 2: भावना का व्यावहारिक रूप बताएँ आगे की पंक्तियों में देशवासियों को बंधु मानने और उनके दुख दूर करने की बात आती है। इससे स्पष्ट है कि सच्ची देशभक्ति सेवा, सहानुभूति और सहयोग में भी दिखाई देनी चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्ति का आशय है कि हमारा देशप्रेम केवल कहने या दिखावे तक सीमित न हो; वह हृदय की सच्ची भावना हो और देशवासियों की सेवा तथा उनके दुख दूर करने के प्रयासों में प्रकट हो।

त्वरित सुझाव: मुख और चित्त के विरोध को समझाकर देशप्रेम का व्यवहार में दिखाई देना भी स्पष्ट करें।

2(अ). विशेषण बनाइए: पश्चिम, चिंतन। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विशेषण संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता, गुण अथवा संबंध बताता है।
- दिए गए मूल शब्द से ऐसा रूप बनाना है जो किसी संज्ञा की विशेषता बताए।

चरण 1: पश्चिम से विशेषण बनाएँ पश्चिम दिशा अथवा क्षेत्र का बोध कराता है। इससे बना विशेषण पाश्चात्य है, जिसका अर्थ पश्चिम से संबंधित है। उदाहरण के लिए, पाश्चात्य संस्कृति में पाश्चात्य शब्द संस्कृति की विशेषता बताता है।

चरण 2: चिंतन से विशेषण बनाएँ चिंतन का अर्थ विचार करना है। इसका विशेषण चिंतनशील है, अर्थात विचार करने की प्रवृत्ति रखने वाला। चिंतनशील व्यक्ति में यह शब्द व्यक्ति की बौद्धिक प्रवृत्ति की विशेषता व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष पश्चिम — पाश्चात्य; चिंतन — चिंतनशील।

त्वरित सुझाव: बनाए गए शब्द को संस्कृति या व्यक्ति जैसी संज्ञा के साथ रखकर जाँचें कि वह उसकी विशेषता बता रहा है।

2(क). निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: उन्नीसवीं शताब्दी में यह राष्ट्रीय जागरण संपूर्ण भारत में किसी-न-किसी रूप में अभिव्यक्त हो रहा था, जिसमें भारतीयता के साथ आधुनिकता का संगम था। स्वामी विवेकानंद ने तो अमेरिका, इंग्लैंड आदि देशों से भारत लौटकर पूर्व और पश्चिम के श्रेष्ठ तत्वों के समिलन से भारत को आधुनिक बनाने का स्वप्न देखा था। उन्होंने माना कि भारत और पश्चिम की मूल गति एवं उद्देश्य भिन्न हैं, परंतु भारत को जागना होगा, कुसंस्कारों एवं जाति-विद्वेष को त्यागना होगा, शिक्षित होकर देश की अशिक्षित, ग़रीब जनता को ही 'दरिद्रनारायण' मानकर उनकी सेवा करनी होगी, उनका उत्थान करना होगा। विवेकानंद का मत था कि भारत में जो जितना दरिद्र है, वह उतना ही साधु है। यहाँ ग़रीबी अपराध एवं पाप नहीं है तथा दरिद्रों की अपेक्षा धनियों को अधिक प्रकाश की ज़रूरत है। वे चाहते थे कि हम नीच, अज्ञानी, दरिद्र — सभी को भाई मानें और गर्व से कहें — हम सब भाई भारतवासी हैं। मनुष्य को मानव बनाना, आदमी को इंसान बनाना आवश्यक है। हमें ऐसी शिक्षा चाहिए जो हमें संस्कारी मानव, हमदर्द इंसान बना सके। विचारों में विवेकानन्द गांधी से अधिक दूर नहीं थे और ऐसे ही विचारों का चिंतन उन्नीसवीं सदी में भारत को उद्वेलित कर रहा था। विवेकानंद कौन थे? उन्होंने क्या स्वप्न देखा था? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश-बोध में व्यक्ति का परिचय और उसके विचार उसी अंश में दिए गए संकेतों से स्पष्ट किए जाते हैं।
- यह प्रश्न विवेकानंद की पहचान तथा भारत के भविष्य के संबंध में उनके स्वप्न, दोनों की माँग करता है।

चरण 1: गद्यांश से परिचय पहचानें स्वामी विवेकानंद राष्ट्रीय जागरण से जुड़े एक महान संन्यासी और चिंतक थे। प्रस्तुत अंश में वे ऐसे विचारक के रूप में सामने आते हैं जो भारतीय समाज में मानवीयता, शिक्षा, भाईचारे और गरीबों की सेवा का विकास चाहते थे। उनका परिचय देते समय इसी राष्ट्रीय और सामाजिक चेतना को प्रमुख रखना चाहिए।

चरण 2: आधुनिक भारत का स्वप्न स्पष्ट करें अमेरिका और इंग्लैंड आदि देशों से लौटकर उन्होंने पूर्व और पश्चिम के श्रेष्ठ तत्वों के समन्वय से भारत को आधुनिक बनाने का स्वप्न देखा। इसका आधार भारतीयता और आधुनिकता का संगम था। वे भारत को जागृत, शिक्षित और कुसंस्कारों तथा जाति-विद्वेष से मुक्त देखना चाहते थे। पश्चिम की सभी बातों का अंधानुकरण उनका उद्देश्य नहीं था; दोनों सभ्यताओं के श्रेष्ठ तत्वों का मेल अपेक्षित था।

चरण 3: निष्कर्ष स्वामी विवेकानंद राष्ट्रीय जागरण के महान संन्यासी और चिंतक थे। उन्होंने पूर्व और पश्चिम के श्रेष्ठ तत्वों का समन्वय करके भारतीयता से युक्त आधुनिक भारत के निर्माण का स्वप्न देखा था।

त्वरित सुझाव: उत्तर के दो हिस्से रखें: पहले विवेकानंद का संक्षिप्त परिचय, फिर पूर्व-पश्चिम के श्रेष्ठ तत्वों के समन्वय वाला स्वप्न।

2(ख). पश्चिम के उद्देश्यों से भिन्न भारत के बारे में उनका क्या मानना था? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विवेकानंद भारत और पश्चिम की मूल गति तथा उद्देश्यों को भिन्न मानते थे।
- भारत के लिए उनका संदेश सामाजिक जागरण, शिक्षा और वंचित जनता के उत्थान से जुड़ा है।

चरण 1: जागरण की सामाजिक शर्तें पहचानें गद्यांश में भारत को जागने और अपनी सामाजिक बुराइयाँ छोड़ने का आह्वान किया गया है। कुसंस्कार तथा जाति-विद्वेष मनुष्यों को अलग करते हैं और समाज की प्रगति रोकते हैं। इसलिए भारत की उन्नति के लिए इनका त्याग तथा आपसी भाईचारा आवश्यक बताया गया है। यह परिवर्तन भारतीय समाज की अपनी आवश्यकताओं से संबंधित है।

चरण 2: शिक्षा और जनसेवा का उद्देश्य बताएँ विवेकानंद चाहते थे कि शिक्षित लोग देश की अशिक्षित और गरीब जनता को दरिद्रनारायण मानें, उनकी सेवा करें और उनका उत्थान करें। यहाँ शिक्षा का प्रयोजन केवल व्यक्तिगत लाभ नहीं, बल्कि समाज के दुखी और वंचित लोगों के प्रति जिम्मेदारी निभाना है। दरिद्रनारायण मानना गरीबों को सम्मान देते हुए उनकी सेवा को महत्त्व देना है।

चरण 3: निष्कर्ष उनका मानना था कि भारत को जागृत होकर कुसंस्कारों और जाति-विद्वेष का त्याग करना चाहिए। शिक्षित भारतवासियों को अशिक्षित, गरीब जनता को दरिद्रनारायण मानकर उसकी सेवा और उत्थान करना चाहिए।

त्वरित सुझाव: गद्यांश के क्रम में जागरण, सामाजिक बुराइयों का त्याग, शिक्षा और गरीबों की सेवा के बिंदु लिखें।

2(ग). आशय स्पष्ट कीजिए — 'दरिद्रनारायण' मानकर उनकी सेवा करनी होगी। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आशय स्पष्ट करते समय शब्द के सामान्य अर्थ के साथ गद्यांश में निहित मानवीय भावना बतानी चाहिए।
- यहाँ दरिद्रों की सेवा, उनके प्रति सम्मान और उनके उत्थान का विचार एक साथ व्यक्त हुआ है।

चरण 1: पद का अर्थ समझें 'दरिद्र' का अर्थ गरीब तथा 'नारायण' का अर्थ ईश्वर है। 'दरिद्रनारायण' कहने से गरीब व्यक्ति में भी ईश्वर का स्वरूप देखने का भाव प्रकट होता है। अतः उसकी निर्धनता उसे उपेक्षा या तिरस्कार का पात्र नहीं बनाती।

चरण 2: सेवा का भाव स्पष्ट करें गद्यांश में गरीब जनता की सेवा और उसका उत्थान करने की बात कही गई है। उनकी सहायता केवल दया दिखाने के लिए नहीं, बल्कि उन्हें आदर और आत्मीयता देने के लिए की जानी चाहिए। गरीबों में ईश्वर का रूप मानना सेवा को श्रद्धा से जोड़ता है तथा उनके सम्मान की रक्षा करता है।

चरण 3: निष्कर्ष इस कथन का आशय है कि गरीबों में ईश्वर का स्वरूप देखकर श्रद्धापूर्वक उनकी सेवा करनी चाहिए और उनके जीवन को बेहतर बनाने के लिए प्रयत्न करना चाहिए।

त्वरित सुझाव: 'दरिद्रनारायण' के उत्तर में गरीब, ईश्वर का स्वरूप और सम्मानपूर्वक सेवा—इन तीन भावों को जोड़ें।

2(घ). विवेकानंद दरिद्रों की अपेक्षा धनियों को अधिक प्रकाश की ज़रूरत क्यों मानते थे? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तुलनात्मक प्रश्न में दोनों पक्षों की स्थिति समझाकर अधिक आवश्यकता का कारण बताना चाहिए।
- गद्यांश में प्रकाश का अर्थ भौतिक रोशनी नहीं, बल्कि ज्ञान, सद्बुद्धि और मानवीय चेतना है।

चरण 1: दरिद्रों के बारे में कथन पहचानें विवेकानंद कहते हैं कि भारत में गरीबी अपराध अथवा पाप नहीं है और जो जितना दरिद्र है, वह उतना ही साधु है। इस कथन में निर्धन लोगों की सरलता और सद्भाव को महत्त्व दिया गया है; धन का अभाव अपने आप में नैतिक हीनता नहीं है।

चरण 2: धनियों की आवश्यकता समझें धनियों को गरीबों की कठिनाइयों को समझने और उनकी सेवा के लिए प्रेरित होने की अधिक आवश्यकता है। केवल संपन्नता से मनुष्यता नहीं आती। उन्हें धन के अभिमान से ऊपर उठाकर संवेदनशील बनाना आवश्यक है, ताकि वे गरीबों को तुच्छ न मानें और उनके उत्थान में सहयोग करें। इसी जागृति को अधिक प्रकाश की आवश्यकता कहा गया है।

चरण 3: निष्कर्ष दरिद्रों में सरलता और साधुता होने के कारण विवेकानंद धनियों को अधिक प्रकाश की आवश्यकता मानते थे, जिससे वे धनाभिमान से ऊपर उठें, मानवता समझें और गरीबों की सेवा करें।

त्वरित सुझाव: पहले 'प्रकाश' का भावार्थ समझें, फिर दरिद्र की साधुता और धनी में अपेक्षित मानवीय जागृति का संबंध बताएँ।

2(ङ). 'मनुष्य को मानव', 'आदमी को इन्सान' बनाने से क्या तात्पर्य है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भावार्थ में शब्दों के शाब्दिक अर्थ से आगे बढ़कर संदर्भ में निहित उद्देश्य स्पष्ट किया जाता है।
- गद्यांश मनुष्य को संस्कारी, हमदर्द और दूसरों की सेवा करने वाला बनाने पर बल देता है।

चरण 1: शाब्दिक अर्थ से अंतर पहचानें 'मनुष्य को मानव' तथा 'आदमी को इन्सान' बनाने का अर्थ किसी की शारीरिक पहचान बदलना

नहीं है। यहाँ मानव और इन्सान शब्द संवेदनशील तथा सदाचारी व्यक्ति के अर्थ में आए हैं। केवल मनुष्य के रूप में जन्म लेना मानवीय गुणों से संपन्न होने की गारंटी नहीं है।

चरण 2: अपेक्षित गुणों को जोड़ें गद्यांश सभी को भाई मानने, गरीबों की सेवा करने और हमदर्द इन्सान बनने की प्रेरणा देता है। इसलिए इन कथनों का उद्देश्य मनुष्य में प्रेम, करुणा, सहानुभूति, भाईचारा और सेवा-भाव विकसित करना है। ऐसा व्यक्ति दूसरों का दुःख समझता है और उनके साथ सम्मान तथा आत्मीयता का व्यवहार करता है।

चरण 3: निष्कर्ष इसका तात्पर्य मनुष्य में संस्कार, करुणा, सहानुभूति और भाईचारा विकसित करके उसे दूसरों के दुःख में सहभागी तथा उनकी सेवा करने वाला सच्चा मानव बनाना है।

त्वरित सुझाव: भावार्थ लिखते समय 'हमदर्द इन्सान' और 'हम सब भाई हैं' जैसे गद्यांश के संकेतों से मानवीय गुण चुनें।

2(च). विवेकानंद के मत में भारतीयों को कैसी शिक्षा की ज़रूरत है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर में गद्यांश द्वारा बताए गए शिक्षा के उद्देश्य को पहचानना चाहिए।
- यहाँ शिक्षा का लक्ष्य संस्कार और मानवीय संवेदना का विकास है।

चरण 1: निर्णायक कथन पहचानें गद्यांश कहता है कि ऐसी शिक्षा चाहिए जो 'संस्कारी मानव, हमदर्द इन्सान' बना सके। यही वाक्य भारतीयों के लिए अपेक्षित शिक्षा का स्वरूप बताता है।

चरण 2: शिक्षा का आशय स्पष्ट करें शिक्षा व्यक्ति को दूसरों का दुःख समझना, आपसी भाईचारा रखना और जरूरतमंदों की सेवा करना सिखाए। इसका उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं, बल्कि अच्छे मानवीय संस्कार विकसित करना है।

चरण 3: निष्कर्ष विवेकानंद के मत में भारतीयों को ऐसी शिक्षा चाहिए जो उन्हें संस्कारी, सहानुभूतिशील और मानव-सेवा के प्रति समर्पित बनाए।

त्वरित सुझाव: शिक्षा के प्रश्न में गद्यांश के 'संस्कारी मानव' और 'हमदर्द इन्सान' पदों को उत्तर का आधार बनाएँ।

2(छ). गद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अच्छा शीर्षक संक्षिप्त होकर पूरे गद्यांश के केंद्रीय विचार को प्रकट करता है।
- शीर्षक चुनते समय किसी अकेले प्रसंग के बजाय बार-बार उभरते मूल विषय पर ध्यान देना चाहिए।

चरण 1: मुख्य विचार पहचानें गद्यांश में विवेकानंद के भारतीयता, गरीबों की सेवा, भाईचारे और संस्कारपूर्ण शिक्षा संबंधी विचार बताए गए हैं। इन सभी विचारों का केंद्र मनुष्य को संवेदनशील तथा मानवतावादी बनाना है।

चरण 2: शीर्षक का दायरा तय करें केवल गरीबी अथवा शिक्षा को शीर्षक बनाने से गद्यांश का एक पक्ष ही व्यक्त होगा। विवेकानंद के नाम के साथ मानवतावादी दृष्टि का उल्लेख करने से सेवा, संवेदना और शिक्षा के विचार एक साथ समाहित हो जाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष उपयुक्त शीर्षक है: **विवेकानंद की मानवतावादी दृष्टि**।

त्वरित सुझाव: शीर्षक में विवेकानंद और मानवता के केंद्रीय भाव को साथ रखें; पूरे गद्यांश को समेटने वाली छोटी पदावली चुनें।

2(ज). उपसर्ग और प्रत्यय अलग कीजिए: अभिव्यक्त, भारतीयता। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मूल शब्द के पहले जुड़ने वाले शब्दांश को उपसर्ग कहते हैं।
- मूल शब्द के बाद जुड़कर नया शब्द बनाने वाले शब्दांश को प्रत्यय कहते हैं।

चरण 1: अभिव्यक्त का उपसर्ग अलग करें 'अभिव्यक्त' में 'व्यक्त' से पहले 'अभि' जुड़ा है। इसलिए इसका विभाजन 'अभि + व्यक्त' होगा और उपसर्ग 'अभि' है। उपसर्ग की पहचान उसके शब्द के आरंभ में जुड़े होने से होती है।

चरण 2: भारतीयता का प्रत्यय अलग करें 'भारतीयता' में 'भारतीय' के अंत में 'ता' जुड़ा है। अत: विभाजन 'भारतीय + ता' होगा और प्रत्यय 'ता' है। यहाँ 'ता' भारतीय होने के भाव को प्रकट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष अभिव्यक्त: अभि + व्यक्त; उपसर्ग—अभि। भारतीयता: भारतीय + ता; प्रत्यय—ता।

त्वरित सुझाव: 'अभिव्यक्त' में आरंभ का 'अभि' और 'भारतीयता' में अंत का 'ता' अलग करके मूल शब्द की जाँच करें।

2(झ). रचना के अनुसार वाक्य-भेद बताइए: भारत में जो जितना दरिद्र है, वह उतना ही साधु है। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मिश्र वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य और कम-से-कम एक आश्रित उपवाक्य होता है।
- वाक्य-भेद केवल क्रियाओं की संख्या देखकर नहीं, उपवाक्यों के पारस्परिक संबंध से तय किया जाता है।

चरण 1: आश्रित उपवाक्य पहचानें 'जो जितना दरिद्र है' संबंधसूचक 'जो' से शुरू होने वाला आश्रित उपवाक्य है। यह आगे आए 'वह' से संबंधित व्यक्ति की विशेषता बताता है और अर्थ की पूर्णता के लिए प्रधान उपवाक्य से जुड़ा है।

चरण 2: प्रधान उपवाक्य पहचानें 'वह उतना ही साधु है' प्रधान उपवाक्य है। 'जो' और 'वह' के संबंध से दोनों भाग जुड़े हैं। ये दो समान स्तर के स्वतंत्र उपवाक्य नहीं हैं, इसलिए यह संयुक्त वाक्य नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष रचना के अनुसार यह **मिश्र वाक्य** है, क्योंकि इसमें एक प्रधान और एक आश्रित उपवाक्य है।

त्वरित सुझाव: 'जो...वह' संबंध मिलने पर प्रधान और आश्रित उपवाक्य अलग करें; इसी आधार पर मिश्र वाक्य पहचानें।

3. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए: (क) खेलकूद में उभरता भारत (ख) क्या नहीं कर सकती नारी (ग) बढ़ती जनसंख्या: अभिशाप या वरदान (घ) काल्पनिक या वास्तविक हवाई यात्रा का वर्णन [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में विषय की स्पष्ट भूमिका, क्रमबद्ध विचार-विस्तार और सार्थक उपसंहार होना चाहिए। प्रत्येक अनुच्छेद मूल विषय से जुड़ा रहे।
- विचारात्मक विषय में तर्क तथा उदाहरण और वर्णनात्मक विषय में अनुभव, दृश्य तथा अनुभूतियाँ प्रधान होती हैं। भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण और शुद्ध रखें।

चरण 1: विषय के अनुसार रूपरेखा बनाइए खेलकूद वाले विषय में उपलब्धियाँ, चुनौतियाँ और सुधार; नारी वाले विषय में क्षमता, योगदान और समान अवसर; जनसंख्या वाले विषय में संसाधनों पर दबाव तथा मानव-संसाधन का विकास लिखें। हवाई यात्रा का वर्णन प्रस्थान, उड़ान, आकाश के दृश्य और आगमन के क्रम में करें। परीक्षा में किसी एक विषय पर लिखना है; अभ्यास के लिए चारों विषयों

के नमूना निबंध नीचे दिए गए हैं।

चरण 2: (क) खेलकूद में उभरता भारत **खेलकूद में उभरता भारत**

खेल केवल मनोरंजन नहीं, व्यक्तित्व और राष्ट्रीय गौरव के विकास का माध्यम भी हैं। वे शरीर को स्वस्थ, मन को अनुशासित और व्यक्ति को संघर्षशील बनाते हैं। भारत में खेलों के प्रति बढ़ती रुचि उसकी नई संभावनाओं का संकेत है।

क्रिकेट की लोकप्रियता के साथ अन्य खेल भी अपनी पहचान बना रहे हैं। हॉकी की गौरवशाली परंपरा हमें प्रेरित करती है। शतरंज में विश्वनाथन आनंद और निशानेबाजी में अभिनव बिंद्रा की सफलता ने भारतीय प्रतिभा का परिचय दिया है। मुक्केबाजी, कुश्ती और बैडमिंटन में आगे आते खिलाड़ी यह विश्वास जगाते हैं कि लगन और प्रशिक्षण से कठिन लक्ष्य प्राप्त किए जा सकते हैं। महिला खिलाड़ियों की भागीदारी इस परिवर्तन को और व्यापक बनाती है।

फिर भी प्रतिभा को सफलता तक पहुँचाने के रास्ते में अनेक बाधाएँ हैं। गाँवों और छोटे नगरों में खेल के मैदान, उपकरण तथा प्रशिक्षक पर्याप्त नहीं हैं। आर्थिक कठिनाइयों के कारण कई प्रतिभाशाली बच्चे अभ्यास छोड़ देते हैं। पढ़ाई और खेल को विरोधी समझने की धारणा भी बदलनी होगी।

विद्यालयों में नियमित खेल, पारदर्शी चयन, पौष्टिक भोजन और योग्य प्रशिक्षण की व्यवस्था होनी चाहिए। खिलाड़ियों को आर्थिक सुरक्षा मिले तथा खेल संस्थाओं में जवाबदेही बढ़े। जीत के साथ खेल-भावना और ईमानदारी का सम्मान भी आवश्यक है। योजनाबद्ध प्रयास और समाज का सहयोग मिले तो उभरता भारत खेल-जगत में स्थायी प्रतिष्ठा अर्जित कर सकता है।

चरण 3: (ख) क्या नहीं कर सकती नारी **क्या नहीं कर सकती नारी**

नारी की क्षमताओं को किसी संकीर्ण सीमा में बाँधना अन्याय है। बुद्धि, साहस, संवेदना और परिश्रम किसी एक लिंग की संपत्ति नहीं हैं। अवसर मिलने पर नारी ने जीवन के विविध क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा सिद्ध की है।

परिवार के निर्माण और बच्चों के संस्कारों में उसका योगदान महत्त्वपूर्ण रहा है। इसके साथ ही शिक्षा, चिकित्सा, विज्ञान, प्रशासन, साहित्य और खेल में भी महिलाओं ने उल्लेखनीय कार्य किए हैं। कल्पना चावला की अंतरिक्ष यात्रा और बछेंद्री पाल की एवरेस्ट विजय साहस तथा संकल्प के प्रेरक उदाहरण हैं। खेतों, कारखानों और कार्यालयों में कार्य करती महिलाएँ देश की अर्थव्यवस्था को शक्ति देती हैं। उनका श्रम समाज की प्रगति का अनिवार्य आधार है।

इतनी क्षमता के बावजूद अनेक महिलाओं को भेदभाव, अशिक्षा, असुरक्षा और अवसरों की कमी का सामना करना पड़ता है। घरेलू जिम्मेदारियों का असमान बोझ भी उनकी प्रगति रोकता है। ये कठिनाइयाँ नारी की अक्षमता का प्रमाण नहीं, सामाजिक व्यवस्था की कमियों का परिणाम हैं।

बालिकाओं की शिक्षा, पोषण और सुरक्षा सुनिश्चित करना आवश्यक है। महिलाओं को निर्णय लेने की स्वतंत्रता, समान पारिश्रमिक और सम्मानजनक कार्यस्थल मिलना चाहिए। परिवार में जिम्मेदारियाँ बाँटकर भी उनके आगे बढ़ने का मार्ग सुगम बनाया जा सकता है।

नारी को दया नहीं, अधिकार और समान अवसर चाहिए। समाज जब उसकी स्वतंत्र पहचान स्वीकार करेगा, तब उसकी प्रतिभा का पूरा विकास होगा। दृढ़ संकल्प और उचित अवसर के साथ नारी किसी भी क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य कर सकती है।

चरण 4: (ग) बढ़ती जनसंख्या: अभिशाप या वरदान **बढ़ती जनसंख्या: अभिशाप या वरदान**

जनसंख्या किसी देश की शक्ति भी है और उसकी जिम्मेदारी भी। मनुष्य अपने श्रम तथा बुद्धि से विकास करता है, पर उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पर्याप्त संसाधन चाहिए। इसलिए बढ़ती जनसंख्या को समझते समय संख्या के साथ जीवन की गुणवत्ता पर भी ध्यान देना आवश्यक है।

जब जनसंख्या की वृद्धि शिक्षा, रोजगार और उत्पादन की वृद्धि से अधिक हो जाती है, तब कठिनाइयाँ बढ़ती हैं। विद्यालयों, अस्पतालों, आवास और परिवहन पर दबाव पड़ता है। बेरोजगारी, गरीबी तथा अव्यवस्थित शहरीकरण की समस्याएँ गंभीर होती हैं। भूमि, जल और ऊर्जा का अत्यधिक उपयोग पर्यावरण को भी प्रभावित करता है। ऐसी परिस्थितियों में जनसंख्या-वृद्धि अभिशाप जैसी प्रतीत होती है।

दूसरी ओर, स्वस्थ, शिक्षित और कुशल जनसमूह देश की बड़ी पूँजी है। युवा लोग खेती, उद्योग, अनुसंधान और सेवा के क्षेत्रों में उत्पादन बढ़ा सकते हैं। पर यह लाभ अपने-आप नहीं मिलता। शिक्षा, प्रशिक्षण और पर्याप्त रोजगार के बिना युवाओं की बड़ी संख्या भी निराशा का कारण बन सकती है।

समाधान के लिए जनसंख्या-वृद्धि में संतुलन और मानव-विकास, दोनों पर काम करना होगा। स्त्री-शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएँ, परिवार-कल्याण की जानकारी और जिम्मेदार अभिभावकत्व आवश्यक हैं। साथ ही रोजगार, कौशल-विकास तथा संसाधनों के न्यायपूर्ण वितरण को बढ़ावा देना चाहिए।

बढ़ती जनसंख्या तभी वरदान बन सकती है जब प्रत्येक व्यक्ति को सम्मानजनक जीवन और अपनी क्षमता विकसित करने का अवसर मिले। अनियंत्रित वृद्धि से बचते हुए मानव-संसाधन का विकास करना ही विवेकपूर्ण मार्ग है।

चरण 5: (घ) हवाई यात्रा का वर्णन **मेरी पहली हवाई यात्रा**

ग्रीष्मावकाश में मुझे पिता जी के साथ दिल्ली से मुंबई जाने का अवसर मिला। यह मेरी पहली हवाई यात्रा थी। कई दिनों से मन में उत्साह के साथ थोड़ी घबराहट भी थी। आकाश में उड़ते विमान को देखने वाला मैं अब स्वयं उसमें बैठने जा रहा था।

हम समय से पहले हवाई अड्डे पहुँचे। प्रवेश और सुरक्षा-जाँच के बाद हमने अपना प्रस्थान-द्वार खोजा। विशाल काँच की खिड़कियों के पार खड़े विमान मुझे बहुत आकर्षक लगे। घोषणा होने पर हम विमान में पहुँचे। खिड़की के पास की सीट पाकर मेरी खुशी बढ़ गई। विमान-परिचारिका ने सुरक्षा संबंधी निर्देश दिए और मैंने अपनी सीट की पेटी बाँध ली।

विमान धीरे-धीरे आगे बढ़ा, फिर तेज गति से दौड़कर ऊपर उठ गया। एक क्षण के लिए मन धक से हुआ, लेकिन नीचे का दृश्य देखकर डर भूल गया। इमारतें छोटी होती गईं और सड़कें पतली रेखाओं जैसी दिखाई देने लगीं। कुछ देर बाद हम बादलों के ऊपर थे। सफेद बादलों का विस्तृत संसार रुई के पहाड़ों जैसा लग रहा था। नीला आकाश अत्यंत निर्मल था।

यात्रा के दौरान मैंने खिड़की से बदलते दृश्य देखे। उतरने की सूचना मिली तो फिर पेटी बाँध ली। नीचे समुद्र और घनी बस्तियाँ दिखाई दीं। विमान ने भूमि को छुआ तो मुझे सुरक्षित पहुँचने की प्रसन्नता हुई।

इस यात्रा ने दूरी को समय में सिमटते देखने का अनोखा अनुभव दिया। बादलों के बीच बिताए वे क्षण आज भी मेरी स्मृति में ताजे हैं।

चरण 6: निष्कर्ष चारों विषयों में भूमिका, विषयानुकूल विस्तार और उपसंहार का क्रम रखा गया है। खेलकूद में नियोजित प्रोत्साहन, नारी के लिए समान अवसर, जनसंख्या के साथ मानव-विकास और यात्रा में क्रमबद्ध अनुभव संबंधित निबंधों के केंद्रीय विचार हैं।

त्वरित सुझाव: विषय चुनते ही उसकी भूमिका, तीन मुख्य विचार और उपसंहार लिख लें। हवाई यात्रा में घटनाक्रम बनाए रखें; अन्य तीन विषयों में समस्या के साथ उपाय भी दें।

4. दो दिन की वर्षा के बाद सड़कों और नालों की दुर्दशा और जनता की परेशानियों की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए, ज़िला अधिकारी को पत्र लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जनसमस्या संबंधी औपचारिक पत्र में प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता का पद तथा पता, विषय, संबोधन, मुख्य कथ्य और समापन आवश्यक हैं।
- शिकायत की भाषा विनम्र, तथ्यपरक और स्पष्ट हो। समस्या का स्थान, उसका कारण, जनता पर प्रभाव और अपेक्षित कार्रवाई क्रम से बताएँ।

चरण 1: पत्र का प्रारूप और विषय तय कीजिए पत्र ज़िला अधिकारी को संबोधित है। ऊपर अपना पता और दिनांक लिखने के बाद प्राप्तकर्ता का पद व कार्यालय लिखें। विषय-पंक्ति में दो दिन की वर्षा के बाद सड़कों की क्षति और जल-निकासी की समस्या संक्षेप में स्पष्ट करें। संबोधन के बाद समस्या, जनता की कठिनाइयों और समाधान के लिए अनुरोध को अलग अनुच्छेदों में रखें।

चरण 2: मुख्य बिंदुओं का क्रम बनाइए पहले दो दिन की वर्षा से हुए जलभराव, सड़कों के गड्ढों और अवरुद्ध नालों का उल्लेख करें। फिर पैदल यात्रियों, विद्यार्थियों, कामकाजी लोगों तथा रोगियों की परेशानियाँ बताएँ। अंत में नालों की सफाई, पानी की निकासी, सड़कों की मरम्मत और स्वच्छता संबंधी कार्रवाई की माँग करें। किसी व्यक्ति पर अप्रमाणित आरोप लगाने के बजाय सार्वजनिक समस्या पर ध्यान केंद्रित रखें।

चरण 3: पूर्ण नमूना पत्र लिखिए 24, शास्त्री नगर
गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश
दिनांक: 18 जुलाई, 2010
सेवा में,

ज़िला अधिकारी महोदय,
ज़िलाधिकारी कार्यालय,
गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश।

विषय: वर्षा के बाद सड़कों की दुर्दशा और अवरुद्ध नालों की सफाई के संबंध में।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि पिछले दो दिनों की लगातार वर्षा के कारण हमारे शास्त्री नगर क्षेत्र की सड़कें और नाले अत्यंत खराब स्थिति में हैं। सड़कों पर अनेक स्थानों पर गहरे गड्ढे हो गए हैं। नालों में कूड़ा और गाद जमा होने से वर्षा का पानी निकल नहीं पा रहा है। कई गलियों में गंदा पानी भर गया है।

जलभराव के कारण लोगों का घरों से निकलना कठिन हो गया है। विद्यार्थियों और कामकाजी लोगों को आने-जाने में बहुत परेशानी होती है। पानी में छिपे गड्ढों से दुर्घटना का भय बना रहता है। वृद्धों तथा रोगियों को आवश्यक सेवाओं तक पहुँचने में कठिनाई हो रही है। दुर्गंध और मच्छरों के बढ़ने से बीमारियाँ फैलने की आशंका भी है।

अतः आपसे अनुरोध है कि संबंधित विभाग को क्षेत्र का निरीक्षण कर नालों की तत्काल सफाई और रुके पानी की निकासी कराने का निर्देश दें। क्षतिग्रस्त सड़कों की मरम्मत, खतरनाक गड्ढों के पास चेतावनी-संकेत तथा आवश्यक सफाई की व्यवस्था भी कराई जाए। भविष्य में ऐसी स्थिति रोकने के लिए वर्षा से पहले नालों की नियमित सफाई सुनिश्चित करना उपयोगी होगा।

आशा है कि जनहित में शीघ्र कार्रवाई की जाएगी।

धन्यवाद।
भवदीय,
अमित कुमार
शास्त्री नगर के निवासियों की ओर से।

चरण 4: निष्कर्ष पत्र में दो दिन की वर्षा से बिगड़ी सड़कों और नालों की स्थिति, जनता की कठिनाइयों तथा तत्काल सफाई, जल-निकासी और मरम्मत की आवश्यकता को औपचारिक एवं विनम्र रूप में ज़िला अधिकारी के सामने रखा गया है।

त्वरित सुझाव: इस शिकायत-पत्र में समस्या, जनता पर उसका प्रभाव और अपेक्षित कार्रवाई को अलग अनुच्छेद दें; विषय-पंक्ति में सड़क और नाला, दोनों का उल्लेख अवश्य करें।

अथवा

4. अथवा बस में गुंडों के द्वारा घेर लिए जाने पर एक महिला यात्री की सहायता करने वाले बस-संवाहक के साहस और कर्तव्य-भावना की प्रशंसा करते हुए परिवहन-निगम के मुख्य प्रबंधक को पत्र लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रशंसा-पत्र में किसी कर्मचारी के सराहनीय कार्य को स्पष्ट घटना के आधार पर संबंधित अधिकारी के ध्यान में लाया जाता है। भाषा शिष्ट, तथ्यपरक और औपचारिक होती है।
- पत्र का क्रम प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता का पद और पता, विषय, संबोधन, मुख्य कथ्य तथा समापन है। इस पत्र में संवाहक के साहस और यात्रियों की सुरक्षा के प्रति उसके कर्तव्य-बोध को उभारना है।

चरण 1: प्रारूप और विषय निर्धारित कीजिए प्राप्तकर्ता परिवहन-निगम का मुख्य प्रबंधक है। विषय में बस-संवाहक की प्रशंसा स्पष्ट करें। घटना बताते समय बस, स्थान और समय का संक्षिप्त उल्लेख उपयोगी होगा। शिकायत की भाषा अपनाने के स्थान पर संवाहक के प्रशंसनीय आचरण और उसके सम्मान के अनुरोध पर ध्यान केंद्रित रखें।

चरण 2: पत्र की सामग्री का क्रम बनाइए पहले महिला यात्री के घिर जाने की स्थिति बताएँ। फिर संवाहक द्वारा बिना भयभीत हुए हस्तक्षेप करने, महिला को सुरक्षित करने और सहायता जुटाने का वर्णन करें। अंत में उसके साहस, सूझबूझ और कर्तव्यनिष्ठा की सराहना करते हुए विभागीय सम्मान का अनुरोध रखें। नीचे इसी योजना पर एक पूर्ण आदर्श पत्र दिया गया है।

चरण 3: पूरा पत्र लिखिए 24, शांति विहार
नई दिल्ली
दिनांक: 28 मार्च, 2010
सेवा में,
मुख्य प्रबंधक
दिल्ली परिवहन निगम
नई दिल्ली

विषय: महिला यात्री की सहायता करने वाले बस-संवाहक के प्रशंसनीय कार्य के संबंध में।

महोदय,

मैं आपके निगम के एक बस-संवाहक के साहस और कर्तव्यनिष्ठा की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। कल सायं लगभग छह बजे मैं निगम की बस से लक्ष्मी नगर से कश्मीरी गेट जा रहा था। रास्ते में कुछ गुंडों ने एक महिला यात्री को घेर लिया और उससे अभद्र व्यवहार करने लगे। महिला भयभीत होकर सहायता माँग रही थी।

बस-संवाहक ने स्थिति समझते ही साहसपूर्वक हस्तक्षेप किया। उसने गुंडों को कड़ी चेतावनी दी और महिला को सुरक्षित स्थान पर बैठाया। फिर चालक से बस रुकवाकर अन्य यात्रियों का सहयोग जुटाया तथा पुलिस को सूचना दी। उसके दृढ़ व्यवहार से महिला को सुरक्षा मिली और अन्य यात्री भी सहायता के लिए आगे आए। उसने संकट के समय सूझबूझ, संवेदनशीलता तथा अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठा का परिचय दिया।

ऐसे कर्मचारी परिवहन निगम की प्रतिष्ठा बढ़ाते हैं और यात्रियों का विश्वास मजबूत करते हैं। आपसे अनुरोध है कि इस बस-संवाहक के सराहनीय कार्य की जाँच कर उसे प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित करें, ताकि अन्य कर्मचारी भी उससे प्रेरणा लें।

धन्यवाद।

भवदीय
अमित कुमार

चरण 4: निष्कर्ष पत्र में घटना के आधार पर संवाहक के साहस, सूझबूझ और कर्तव्य-भावना की प्रशंसा की गई है तथा मुख्य प्रबंधक से उसे सम्मानित करने का अनुरोध किया गया है।

त्वरित सुझाव: प्रशंसा-पत्र में घटना, कर्मचारी का विशेष योगदान और सम्मान का अनुरोध स्पष्ट रखें; विषय-पंक्ति में ही पत्र का उद्देश्य बता दें।

5(क)(i). संक्षेप में उत्तर दीजिए: संपादकीय किसे कहते हैं? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादकीय समाचार-पत्र की वैचारिक टिप्पणी है। इसका संबंध किसी महत्त्वपूर्ण समसामयिक विषय या घटना से होता है।
- इसमें तथ्यों के विश्लेषण के साथ समाचार-पत्र का दृष्टिकोण व्यक्त होता है; केवल घटना का विवरण देना इसका उद्देश्य नहीं है।

चरण 1: संपादकीय का स्वरूप पहचानिए समाचार-पत्र किसी प्रमुख सामाजिक, राजनीतिक या आर्थिक मुद्दे का विश्लेषण करके उस पर अपना मत प्रस्तुत करता है। संपादकीय पाठक को मुद्दे के विभिन्न पक्ष समझने में सहायता देता है।

चरण 2: समाचार-पत्र के मत से जोड़िए संपादकीय में व्यक्त विचार समाचार-पत्र की संपादकीय नीति और दृष्टि का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसलिए इसे किसी संवाददाता की साधारण समाचार-रिपोर्ट या केवल व्यक्तिगत पत्र के समान नहीं समझना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष किसी महत्त्वपूर्ण समसामयिक विषय पर समाचार-पत्र के दृष्टिकोण को व्यक्त करने वाला विश्लेषणात्मक लेख संपादकीय कहलाता है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में तीन बातें जोड़ें: समसामयिक विषय, उसका विश्लेषण और समाचार-पत्र का अपना दृष्टिकोण।

5(क)(ii). समाचार और फ़ीचर में क्या अंतर होता है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार किसी नवीन घटना की तथ्यपरक और संक्षिप्त सूचना देता है। उसका महत्त्व मुख्यतः घटना की तात्कालिकता से जुड़ा होता है।
- फ़ीचर किसी विषय के मानवीय, रोचक और संवेदनात्मक पहलुओं को विस्तार से प्रस्तुत करता है। उसकी शैली अधिक रचनात्मक हो सकती है।

चरण 1: समाचार की विशेषता बताइए समाचार में क्या, कहाँ, कब, कौन, क्यों और कैसे जैसी आवश्यक जानकारियाँ प्रमुख होती हैं। तथ्य सीधे, स्पष्ट और वस्तुनिष्ठ ढंग से प्रस्तुत किए जाते हैं; लेखक की निजी भावुकता केंद्र में नहीं रहती।

चरण 2: फ़ीचर की विशेषता से तुलना कीजिए फ़ीचर में विवरण, परिवेश और मानवीय अनुभवों का रोचक चित्रण मिलता है। वह तत्काल घटी घटना तक सीमित नहीं होता। उसकी प्रस्तुति साहित्यिक हो सकती है, लेकिन रोचकता के लिए तथ्य गढ़ना उचित नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष समाचार ताजा घटना की संक्षिप्त, तथ्यपरक सूचना है, जबकि फ़ीचर विषय के मानवीय और रोचक पक्षों की विस्तृत, रचनात्मक प्रस्तुति है।

त्वरित सुझाव: अंतर लिखते समय समाचार के लिए तात्कालिक सूचना और फ़ीचर के लिए मानवीय रोचक प्रस्तुति को आधार बनाएँ।

5(क)(iii). विशेष लेखन के किन्हीं दो प्रकारों का नामोल्लेख कीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विशेष लेखन किसी निश्चित विषय-क्षेत्र पर केंद्रित पत्रकारिता है। उसमें उस क्षेत्र की जानकारी और विशिष्ट शब्दावली की समझ आवश्यक होती है।
- खेल, अर्थव्यवस्था, विज्ञान और कृषि जैसे क्षेत्रों के आधार पर विशेष लेखन के अलग-अलग प्रकार पहचाने जाते हैं।

चरण 1: पहला प्रकार पहचानिए खेल लेखन में प्रतियोगिताओं, खिलाड़ियों, खेल-नियमों तथा प्रदर्शन का विवरण और विश्लेषण दिया जाता है। विषयगत जानकारी के कारण यह विशेष लेखन का एक प्रकार है।

चरण 2: दूसरा प्रकार पहचानिए आर्थिक लेखन में अर्थव्यवस्था, व्यापार, उद्योग, बजट और बाजार से जुड़ी जानकारी प्रस्तुत की जाती है। इसके लिए आर्थिक प्रक्रियाओं और शब्दावली की समझ अपेक्षित होती है। प्रश्न में केवल नाम माँगे गए हैं, इसलिए उत्तर में दोनों प्रकारों के नाम पर्याप्त हैं।

चरण 3: निष्कर्ष विशेष लेखन के दो प्रकार हैं: खेल लेखन और आर्थिक लेखन।

त्वरित सुझाव: विशेष लेखन का प्रकार बताते समय विषय-क्षेत्र का नाम दें; समाचार या संपादकीय जैसे प्रस्तुति-रूपों को प्रकार न लिखें।

5(क)(iv). पत्रकारिता की भाषा में 'बीट' का क्या आशय है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार-संग्रह के काम को व्यवस्थित करने के लिए संवाददाताओं के बीच विषय या क्षेत्र बाँटे जाते हैं।
- किसी संवाददाता को नियमित समाचार-संग्रह और रिपोर्टिंग के लिए सौंपा गया निश्चित विषय अथवा क्षेत्र उसकी बीट कहलाता है।

चरण 1: निश्चित जिम्मेदारी समझिए बीट का आशय उस क्षेत्र से है जिसकी घटनाओं, गतिविधियों और सूचनाओं पर संवाददाता नियमित

दृष्टि रखता है। वह संबंधित संस्थाओं तथा स्रोतों से संपर्क बनाए रखकर समाचार जुटाता है।

चरण 2: उदाहरण से अर्थ स्पष्ट कीजिए यदि किसी संवाददाता को शिक्षा-संबंधी समाचार जुटाने का दायित्व मिला है, तो शिक्षा उसकी बीट है। इसी प्रकार अपराध या खेल भी किसी संवाददाता की बीट हो सकते हैं। यह उसका निर्धारित कार्यक्षेत्र है, किसी समाचार का शीर्षक नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष पत्रकारिता में बीट संवाददाता को समाचार-संग्रह और रिपोर्टिंग के लिए सौंपा गया निश्चित विषय या क्षेत्र है।

त्वरित सुझाव: बीट की परिभाषा में संवाददाता, सौंपा गया क्षेत्र और नियमित समाचार-संग्रह का संबंध स्पष्ट करें।

5(क)(v). किन्हीं दो हिन्दी समाचार चैनलों के नाम लिखिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार चैनल टेलीविजन का वह माध्यम है जो समाचार और समसामयिक घटनाओं से संबंधित कार्यक्रम प्रसारित करता है।
- हिन्दी समाचार चैनल की पहचान उसके समाचार-प्रसारण की भाषा से होती है। प्रश्न में चैनलों के नाम माँगे गए हैं, कार्यक्रमों के नहीं।

चरण 1: पहला उपयुक्त नाम चुनिए आज तक एक हिन्दी समाचार चैनल है। इस नाम को उत्तर में लिखना उपयुक्त है, क्योंकि यह समाचार चैनल की माँगी गई श्रेणी में आता है।

चरण 2: दूसरा स्वतंत्र नाम चुनिए एनडीटीवी इंडिया भी हिन्दी समाचार चैनल है। इसे आज तक के साथ लिखने पर दो अलग चैनलों का नामोल्लेख पूरा हो जाता है। किसी समाचार-पत्र, रेडियो केंद्र या धारावाहिक का नाम इस प्रश्न का अपेक्षित उत्तर नहीं होगा।

चरण 3: निष्कर्ष दो हिन्दी समाचार चैनल हैं: आज तक और एनडीटीवी इंडिया।

त्वरित सुझाव: उत्तर में दो अलग हिन्दी समाचार चैनलों के पूरे नाम लिखें; किसी चैनल के कार्यक्रम को दूसरा चैनल न मानें।

5(ख). 'महिलाओं के विरुद्ध बढ़ते अपराध' अथवा 'वरिष्ठ नागरिकों की समस्याएँ' विषय पर एक फ़ीचर का आलेख लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर में किसी विषय का मानवीय पक्ष रोचक और संवेदनशील शैली में प्रस्तुत किया जाता है। शीर्षक, प्रभावशाली आरंभ, विषय का विस्तार और विचारोत्तेजक समापन इसके प्रमुख अंग हैं।
- सामाजिक समस्या पर लिखते समय उसके प्रभाव, कारण और व्यावहारिक उपाय जोड़ें। बिना प्रमाण आँकड़े देने या पीड़ित व्यक्ति को दोष देने से बचें।

चरण 1: प्रारूप और विषय-योजना दोनों विषयों के लिए शीर्षक और लेखक का नाम दिया जाएगा। पहले फ़ीचर में महिलाओं की असुरक्षा से उनके जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव, सामाजिक सोच और सुरक्षा के उपाय आएँगे। दूसरे में बुज़ुर्गों के अकेलेपन, स्वास्थ्य, आर्थिक निर्भरता और सम्मानपूर्ण सहभागिता पर विचार होगा। नीचे दोनों विकल्पों के स्वतंत्र नमूना आलेख दिए गए हैं।

चरण 2: पहले विषय का नमूना फ़ीचर **डर से आज़ादी कब मिलेगी?**

लेखिका: अनामिका

बेटी घर से निकलती है तो माँ की आँखें घड़ी पर टिक जाती हैं। लौटने में थोड़ी देर होते ही चिंता बढ़ने लगती है। यह बेचैनी केवल एक परिवार की नहीं; महिलाओं के विरुद्ध अपराध पूरे समाज के विश्वास को घायल करते हैं। सड़क, कार्यस्थल और घर, हर जगह सुरक्षा स्त्री का अधिकार है।

छेड़छाड़, हिंसा और उत्पीड़न का असर केवल शरीर तक सीमित नहीं रहता। भय पढ़ाई, रोज़गार और स्वतंत्र आवागमन के अवसर छीन सकता है। पीड़िता को चुप रहने की सलाह देना या उसके पहनावे पर प्रश्न उठाना अपराधी को बचाने वाली सोच है। ज़रूरत पीड़िता को भरोसा देने और उसकी बात सम्मान से सुनने की है।

स्त्री को कमतर समझने वाली मानसिकता, हिंसा के प्रति उदासीनता और शिकायत करने में आने वाली कठिनाइयाँ समस्या को गंभीर बनाती हैं। घर और विद्यालय में समानता तथा परस्पर सम्मान की शिक्षा आवश्यक है। सुरक्षित सार्वजनिक परिवहन, पर्याप्त रोशनी और शिकायत पर संवेदनशील कार्रवाई सुरक्षा का वातावरण बना सकती है। पड़ोसी और राहगीर भी अन्याय देखकर चुप रहने के बजाय सहायता जुटाएँ।

सुरक्षा के नाम पर महिलाओं की स्वतंत्रता सीमित करना समाधान नहीं है। परिवर्तन तब होगा जब समाज अपराधी से जवाब माँगेगा और प्रत्येक स्त्री बिना भय अपने सपनों की ओर बढ़ सकेगी।

चरण 3: दूसरे विषय का नमूना फ़ीचर **उम्र की साँझ में साथ की धूप**

लेखक: आदित्य

सुबह की चाय के सामने दो कुर्सियाँ रखी हैं, पर एक ही कुर्सी भरी है। दरवाज़े की आहट पर उठती निगाहें किसी अपने को खोजती हैं। जीवन भर परिवार सँभालने वाले अनेक वरिष्ठ नागरिकों के लिए वृद्धावस्था का सबसे बड़ा संकट केवल कमज़ोर शरीर नहीं, बातचीत और अपनत्व का अभाव भी है।

बदलती पारिवारिक व्यवस्था, काम के कारण बच्चों का दूर रहना और तेज़ जीवनशैली बुज़ुर्गों को अकेला कर सकती है। नियमित इलाज, दवाइयों का खर्च और आने-जाने की कठिनाई उनकी चिंता बढ़ाते हैं। जिनके पास पर्याप्त बचत या नियमित आय नहीं है, उनके लिए आर्थिक निर्भरता आत्मसम्मान को भी प्रभावित करती है। नई तकनीक से अपरिचय के कारण रोज़मर्रा के कामों में भी सहायता चाहिए होती है।

समाधान केवल सुविधाएँ देना नहीं, उन्हें निर्णयों में सहभागी बनाना भी है। परिवार प्रतिदिन बातचीत के लिए समय निकाले, उनके स्वास्थ्य का ध्यान रखे और उनकी इच्छा का सम्मान करे। मोहल्लों में मिलन-केंद्र, पुस्तकालय और सामूहिक गतिविधियाँ उनके सामाजिक संबंध मज़बूत कर सकती हैं। सुविधाजनक परिवहन और सुलभ चिकित्सा भी ज़रूरी हैं। तकनीक सिखाते समय धैर्य रखा जाए।

वरिष्ठ नागरिक अनुभव और स्मृतियों की मूल्यवान धरोहर हैं। उन्हें बोझ मानने के बजाय उनकी क्षमताओं को पहचानना होगा। उम्र की साँझ तभी उजली होगी जब सहायता के साथ सम्मान और अपनापन भी मिलेगा।

चरण 4: निष्कर्ष दोनों नमूना फ़ीचर अपने विषय के मानवीय पक्ष से आरंभ होकर समस्या, कारण और उपायों को जोड़ते हैं तथा संवेदनशील समापन तक पहुँचते हैं।

त्वरित सुझाव: फ़ीचर शुरू करते समय पाठक के सामने एक मानवीय दृश्य रखें; फिर उसी से समस्या, उसके प्रभाव और ठोस उपाय जोड़ते हुए शीर्षक का भाव समापन में लौटाएँ।

6. 'मोबाइल बिना लगे सब सूना' अथवा 'नई फ़िल्म के दर्शक नदारद' विषय पर एक रिपोर्ट का आलेख लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रिपोर्ट में घटना या परिस्थिति का क्रमबद्ध, स्पष्ट और तथ्यप्रधान विवरण दिया जाता है। शीर्षक, संवाददाता, स्थान और तिथि के बाद मुख्य सूचना तथा संबंधित विवरण आते हैं।
- विषय केवल संकेत के रूप में दिया गया है; इसलिए लेखन-अभ्यास के लिए नीचे नमूना परिस्थितियों पर आधारित दो स्वतंत्र रिपोर्टें दी गई हैं। भाषा में अतिशयोक्ति और अप्रमाणित आँकड़ों से बचा गया है।

चरण 1: रिपोर्ट का ढाँचा और सामग्री तय करें पहली रिपोर्ट में मोबाइल सेवा बाधित होने की एक नमूना परिस्थिति लेकर संचार पर निर्भरता दिखाई जाएगी। दूसरी में नई फ़िल्म के शुरुआती प्रदर्शन में कम दर्शक आने की परिस्थिति ली जाएगी। दोनों में घटना की मुख्य जानकारी पहले, फिर उसका प्रभाव और संबंधित प्रतिक्रियाएँ आएँगी। नाम, स्थान और तिथि नमूना रिपोर्ट के प्रारूप का हिस्सा हैं।

चरण 2: पहले विषय की नमूना रिपोर्ट **मोबाइल बिना लगे सब सूना**

संवाददाता: आदित्य

नई दिल्ली, 15 मार्च 2010। स्थानीय क्षेत्र में सोमवार सुबह मोबाइल सेवा बाधित होने से लोगों को संपर्क करने में कठिनाई हुई। कई उपभोक्ता न तो फ़ोन कर पा रहे थे, न संदेश भेज पा रहे थे। कार्यालय जाने वाले लोगों और घर से बाहर निकले विद्यार्थियों को अपने परिवार तक सूचना पहुँचाने के लिए दूसरे साधन खोजने पड़े।

बाज़ार में कारोबारियों को ग्राहकों और सामान पहुँचाने वालों से संपर्क करने में परेशानी हुई। कुछ लोगों ने सार्वजनिक टेलीफ़ोन का सहारा लिया, जबकि दूसरे परिचितों के माध्यम से संदेश भिजवाते दिखाई दिए। घर लौटने में देर होने की सूचना न मिल पाने से परिवारों में चिंता रही। सेवा केंद्र पर शिकायत लेकर पहुँचे उपभोक्ताओं ने संपर्क शीघ्र बहाल करने की माँग की।

दोपहर बाद संपर्क सुविधा लौटने पर लोगों ने राहत महसूस की। उपभोक्ताओं ने बताया कि थोड़े समय की बाधा से ही रोज़मर्रा का काम प्रभावित हो गया। इस अनुभव के बाद कुछ परिवारों ने आवश्यक संपर्क नंबर लिखकर रखने और आपात स्थिति में संपर्क के वैकल्पिक साधन तय करने की बात कही।

चरण 3: दूसरे विषय की नमूना रिपोर्ट **नई फ़िल्म के दर्शक नदारद**

संवाददाता: अनामिका

नई दिल्ली, 19 मार्च 2010। स्थानीय चित्रा सिनेमाघर में शुक्रवार को प्रदर्शित नई फ़िल्म के शुरुआती शो में दर्शकों की उपस्थिति कम रही। टिकट खिड़की के बाहर अपेक्षित भीड़ दिखाई नहीं दी और प्रदर्शन शुरू होने के समय भी कई सीटें खाली थीं। फ़िल्म के प्रचार के लिए लगाए गए पोस्टरों के बावजूद शुरुआती प्रतिक्रिया उत्साहजनक नहीं रही।

सिनेमाघर के बाहर मौजूद कुछ दर्शकों ने कहानी में नवीनता की कमी को अपनी निराशा का कारण बताया। वहीं कुछ लोगों ने टिकट के खर्च के कारण पहले परिचितों की प्रतिक्रिया जानकर फ़िल्म देखने की बात कही। इन प्रतिक्रियाओं से दर्शकों की अलग-अलग प्राथमिकताएँ सामने आईं; कम उपस्थिति का कोई एक निश्चित कारण स्पष्ट नहीं हुआ।

सिनेमाघर के कर्मचारियों ने सप्ताहांत में दर्शक बढ़ने की आशा व्यक्त की। पहले दिन के सीमित अनुभव के आधार पर फ़िल्म के पूरे व्यावसायिक परिणाम का निर्णय करना जल्दबाज़ी होगा। शुरुआती शो की खाली सीटों के बाद अब सबकी निगाहें अगले प्रदर्शनों में दर्शकों की प्रतिक्रिया पर टिकी हैं।

चरण 4: निष्कर्ष दोनों नमूना रिपोर्टें शीर्षक, संवाददाता, स्थान, तिथि और मुख्य विवरण सहित पूर्ण हैं। पहली संचार में बाधा के प्रभावों को और दूसरी फ़िल्म के शुरुआती प्रदर्शनों में कम उपस्थिति को क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत करती है।

त्वरित सुझाव: रिपोर्ट की पहली पंक्ति में कहाँ, कब और क्या हुआ स्पष्ट करें; फिर प्रभाव तथा प्रतिक्रियाएँ जोड़ें और शुरुआती जानकारी से पूरे भविष्य का निर्णय न निकालें।

7(क). निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: सचमुच मुझे दंड दो कि भूलूँ मैं भूलूँ मैं तुम्हें भूल जाने की दक्षिण ध्रुवी अंधकार – अमावस्या शरीर पर, चेहरे पर, अंतर में पा लूँ मैं झेलूँ मैं, उसी में नहा लूँ मैं इसलिए कि तुमसे ही परिवेष्टित आच्छादित रहने का रमणीय यह उजेला अब सहा नहीं जाता है। नहीं सहा जाता है। काव्यांश में प्रयुक्त 'तुम्हें' पद आपके विचार से किसके लिए प्रयुक्त हुआ है? आप ऐसा क्यों मानते हैं? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में संबोधन का अर्थ उसके आसपास आए भावों और बिंबों से निर्धारित किया जाता है। यहाँ आत्मीय संबंध का प्रभाव प्रकाश और अंधकार के विरोध से व्यक्त है।
- उत्तर में संबोधित व्यक्ति की पहचान के साथ उसका पाठगत आधार देना आवश्यक है। कवि की अनुभूति समझाते समय कोई अप्रमाणित निजी नाम जोड़ना उचित नहीं है।

चरण 1: संबोधन का संकेत पहचानें मेरे विचार से 'तुम्हें' कवि की अत्यंत प्रिय आत्मीय सत्ता, अर्थात उस प्रिय व्यक्ति के लिए प्रयुक्त

है जिसके स्नेह और प्रभाव से उसका जीवन पूरी तरह घिरा हुआ है। वह केवल कोई अपरिचित व्यक्ति नहीं हो सकता, क्योंकि उसे भूलने की कल्पना भी कवि के लिए कठोर दंड बन जाती है।

चरण 2: काव्यांश से कारण स्पष्ट करें 'तुमसे ही परिवेष्ठित आच्छादित रहने' से स्पष्ट है कि प्रिय का प्रभाव कवि के समूचे व्यक्तित्व और अंतर्मन पर छाया हुआ है। कवि इसी अनुभूति को 'रमणीय यह उजेला' कहता है। इसके विपरीत प्रिय को भूलना 'दक्षिण ध्रुवी अंधकार' और 'अमावस्या' पाने जैसा है। प्रकाश और अंधकार का यह विरोध प्रिय के गहरे, जीवनव्यापी महत्त्व की पुष्टि करता है।

चरण 3: निष्कर्ष अत: 'तुम्हें' कवि के प्रिय आत्मीय व्यक्ति के लिए प्रयुक्त है; उसका स्नेह कवि का जीवन आलोकित करता है और उसे भूलना कवि को घोर अंधकार में डूबने जैसा लगता है।

त्वरित सुझाव: 'तुम्हें' की पहचान लिखने के बाद 'रमणीय यह उजेला' और उसे भूलने के अंधकार का उल्लेख करें; इससे उत्तर का कारण सीधे काव्यांश से प्रमाणित होगा।

7(ख). कवि के व्यक्तिगत संदर्भ में 'अमावस्या' की स्थिति को स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में प्राकृतिक दृश्य मन की अवस्था के प्रतीक बनकर आते हैं। अमावस्या का अंधकार यहाँ कवि के निजी अनुभव से जुड़ा है।
- प्रिय का स्नेह जीवन को उजाला देता है; उसके विस्मरण की कल्पना उस उजाले से वंचित होने की स्थिति है।

चरण 1: प्रतीक का संदर्भ समझिए कवि का व्यक्तित्व प्रिय के स्नेह और प्रभाव से चारों ओर से घिरा हुआ है। वह इस स्थिति को रमणीय उजाले के रूप में देखता है। इसके विपरीत अमावस्या उस पूर्ण अंधकार की प्रतीक है, जिसमें प्रिय की स्मृति और उसके स्नेह का प्रकाश न रहे। इसलिए इसका अर्थ केवल चंद्रमा के न दिखाई देने की प्राकृतिक घटना नहीं है।

चरण 2: कवि की निजी मन:स्थिति स्पष्ट कीजिए कवि प्रिय को भूलने का दंड माँगता है। वह चाहता है कि विस्मृति का घना अंधकार उसके शरीर, चेहरे और अंतर्मन तक छा जाए। दक्षिण ध्रुवी अंधकार का उल्लेख इस अंधेरे की गहनता को बढ़ाता है। निजी संदर्भ में यह प्रिय के स्नेह से वंचित, एकाकी और पीड़ापूर्ण जीवन की स्थिति है, जिसे कवि झेलने के लिए भी तैयार दिखाई देता है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि के लिए अमावस्या प्रिय को भूल जाने से उत्पन्न स्नेहहीनता, एकाकीपन और अंतर्मन के गहरे अंधकार की अवस्था है।

त्वरित सुझाव: अमावस्या का अर्थ लिखते समय उसे कविता के रमणीय उजाले के सामने रखिए; तभी निजी जीवन से जुड़ा प्रतीकार्थ स्पष्ट होगा।

7(ग). कवि अपने संबोध्य प्रिय पात्र को क्यों भूल जाना चाहता है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि के मन में प्रिय के प्रति गहरा लगाव है; उसके विस्मरण की इच्छा इसी तीव्र संबंध की जटिलता प्रकट करती है।
- काव्यांश में प्रिय का प्रभाव रमणीय उजाले के रूप में और उससे अलग होने की स्थिति अंधकार के रूप में व्यक्त है।

चरण 1: प्रिय के सर्वव्यापी प्रभाव को समझिए कवि प्रिय के स्नेह और व्यक्तित्व से इतना प्रभावित है कि उसे अपने चारों ओर उसी का घेरा अनुभव होता है। उसके शरीर और अंतर्मन तक में प्रिय की उपस्थिति है। यह संबंध उसे सुख और उजाला देता है, पर इसकी निरंतरता और तीव्रता उसके लिए बोझिल भी हो उठी है।

चरण 2: भूलने की इच्छा का कारण बताइए प्रिय के स्नेह से हर समय घिरे रहने का रमणीय उजाला अब कवि से सहन नहीं होता। वह इस अत्यधिक भावनात्मक आश्रय से छुटकारा पाना चाहता है, इसलिए प्रिय को भूल जाने की कामना करता है। वह विस्मरण से मिलने वाले अंधकार और कष्ट को भी दंड की तरह स्वीकारने को तैयार है। इससे प्रिय के प्रति घृणा नहीं, बल्कि स्नेह के अत्यधिक प्रभाव से

उत्पन्न उसकी विवशता और छटपटाहट प्रकट होती है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि प्रिय को इसलिए भूलना चाहता है कि उसके स्नेह का सर्वव्यापी, रमणीय उजाला अब असह्य हो गया है और वह इस भावनात्मक घेराव से मुक्त होना चाहता है।

त्वरित सुझाव: कारण बताते समय प्रिय से घृणा न लिखिए; रमणीय उजाले के असह्य हो जाने और कवि की मुक्ति की छटपटाहट को जोड़िए।

7(घ). काव्यांश में दो स्थानों पर दो वाक्यांशों की आवृत्ति से अर्थ में क्या विशेष प्रभाव पड़ा है? स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य में किसी वाक्यांश की आवृत्ति भाव पर बल देती है और मन की तीव्रता को सुनने योग्य बनाती है।
- इस अंश में भूलने की व्याकुल इच्छा और वर्तमान स्थिति को सह न पाने की विवशता दो प्रमुख भाव हैं।

चरण 1: पहली आवृत्ति का प्रभाव बताइए 'भूलूँ मैं भूलूँ मैं' की आवृत्ति प्रिय को भूल जाने की तीव्र इच्छा और बेचैनी को उभारती है। एक ही इच्छा का बार-बार उच्चारण बताता है कि कवि अपने मन को उसके लिए तैयार करना चाहता है, किंतु प्रिय का प्रभाव इतना गहरा है कि भूलना सरल नहीं है। इस दोहराव से उसकी प्रार्थना अधिक आग्रहपूर्ण और व्याकुल बनती है।

चरण 2: दूसरी आवृत्ति का प्रभाव बताइए अंत में 'नहीं सहा जाता है' के दोहराव से प्रिय के रमणीय उजाले की असहनीयता और कवि की विवशता पर विशेष बल पड़ता है। पहली बार कथन मनःस्थिति बताता है और पुनरावृत्ति उसी पीड़ा को अधिक प्रबल कर देती है। इससे भाव की चरम स्थिति, छटपटाहट तथा भीतर के तनाव की अनुभूति होती है; साथ ही कथन में लय और प्रभाव बढ़ता है।

चरण 3: निष्कर्ष पहली आवृत्ति भूलने की उत्कट आकांक्षा को और दूसरी असहनीयता तथा विवशता को तीव्र बनाती है। दोनों मिलकर कवि की भावनात्मक छटपटाहट को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करती हैं।

त्वरित सुझाव: हर दोहराए गए वाक्यांश को अलग लिखकर उसके विशेष भाव से जोड़िए; केवल अलंकार का नाम लिखना अर्थगत प्रभाव का पूरा उत्तर नहीं है।

अथवा

7(क). अथवा (बात सीधी थी पर काव्यांश पर आधारित प्रश्न): बात की चूड़ी कब मरती है? उसका क्या परिणाम होता है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कुँवर नारायण की कविता कथ्य और भाषा के स्वाभाविक संबंध को महत्त्व देती है। भाषा का उद्देश्य बात को स्पष्ट करना है।
- पेंच की चूड़ी और बात का संबंध रूपक के द्वारा स्थापित है; अनावश्यक कसाव से दोनों की उपयोगिता नष्ट हो सकती है।

चरण 1: चूड़ी मरने की स्थिति बताइए जिस प्रकार पेंच को सीमा से अधिक कसने पर उसकी चूड़ी घिस जाती है, उसी प्रकार सीधी बात को भाषा में अनावश्यक रूप से घुमाने और उलझाने से बात की चूड़ी मर जाती है। लेखक जब कथ्य की सहजता के स्थान पर शब्दों के चमत्कार और कृत्रिम भाषाई कसाव पर अधिक ध्यान देता है, तब मूल बात की स्वाभाविक अभिव्यक्ति बिगड़ जाती है।

चरण 2: परिणाम स्पष्ट कीजिए अत्यधिक उलझाव के बाद बात अर्थ और प्रभाव की पकड़ खो देती है। भाषा चलती रहती है, पर मूल कथ्य स्पष्ट रूप से संप्रेषित नहीं हो पाता। कविता में पेंच का कसाव समाप्त होने पर उसका बेकार घूमना इसी विफलता का बिंब है। इस स्थिति में बात को फिर सहज ढंग से व्यक्त करने के बजाय और ज़ोर लगाना उसे अधिक विकृत करता है।

चरण 3: निष्कर्ष भाषा को अनावश्यक रूप से पेचीदा बनाकर बात को अधिक कसने पर उसकी चूड़ी मरती है; फलतः उसका अर्थ, प्रभाव और सहज संप्रेषण नष्ट होने लगता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर के दो हिस्से रखिए: अनावश्यक भाषाई उलझाव कारण है और कथ्य की पकड़ तथा संप्रेषण का नष्ट होना परिणाम है।

7(ख). भाषा-प्रयोग के संदर्भ में 'कील की तरह ठोंक देने' का क्या भाव है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में पेंच और कील के बिंब भाषा के सहज प्रयोग तथा उसके साथ की गई जबरदस्ती का अंतर स्पष्ट करते हैं।
- कथ्य के अनुरूप भाषा अपनाने पर अभिव्यक्ति स्वाभाविक होती है; केवल बाहरी प्रभाव के लिए भाषा थोपने पर वह विकृत होती है।

चरण 1: बिंब का प्रसंग समझिए पेंच की चूड़ी खराब हो जाने पर उसे स्वाभाविक ढंग से कसना संभव नहीं रहता। उसे कील की तरह ठोंक देना उस कठिनाई का जबरदस्ती निकाला गया उपाय है। कविता में यह स्थिति तब आती है जब सीधी बात को भाषा में इतना उलझा दिया जाता है कि उसका स्वाभाविक रूप और अर्थ की पकड़ बिगड़ जाती है।

चरण 2: भाषा-प्रयोग का भाव स्पष्ट कीजिए कील की तरह ठोंक देने का भाव है कथ्य को सहज ढंग से व्यक्त करने के बजाय बलपूर्वक भाषा में जड़ देना। लेखक अपनी भाषाई जिद या शब्द-चमत्कार के आग्रह में बात को ऐसे रूप में रख देता है जो उसके भाव के अनुकूल नहीं है। इस ज़बरदस्ती से अभिव्यक्ति का बाहरी रूप तो बन जाता है, लेकिन बात की स्पष्टता, स्वाभाविकता और जीवंत प्रभाव दब जाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष भाषा के संदर्भ में कील की तरह ठोंकना बात को कृत्रिम ढंग से, ज़बरदस्ती शब्दों में जड़ देना है, जिससे कथ्य की सहजता और प्रभाव नष्ट होते हैं।

त्वरित सुझाव: कील के शाब्दिक अर्थ पर न रुकिए; ठोंकने की जबरदस्ती को कथ्य पर थोपी गई कृत्रिम भाषा से जोड़कर समझाइए।

7(ग). आशय स्पष्ट कीजिए — "क्या तुमने भाषा को सहूलियत से बरतना कभी नहीं सीखा?" [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता भाषा को कथ्य का माध्यम मानती है। सफल अभिव्यक्ति में शब्द भाव को स्पष्ट करते हैं, उसे अनावश्यक रूप से उलझाते नहीं हैं।
- सहूलियत से भाषा बरतने का अर्थ है प्रसंग और भाव के अनुकूल सहज, स्वाभाविक तथा संप्रेषणीय भाषा का प्रयोग करना।

चरण 1: प्रश्नवाचक कथन का संकेत समझिए इस कथन में बात मानवीय रूप लेकर कवि से प्रश्न करती है। कवि ने एक सीधी बात को भाषा की पेचीदगी में फँसा दिया है, इसलिए यह प्रश्न उसकी अभिव्यक्ति-पद्धति पर व्यंग्य करता है। शब्दों को अनावश्यक रूप से उलटने-पलटने और कृत्रिम चमत्कार पैदा करने से सरल कथ्य कठिन बन जाता है।

चरण 2: निहित संदेश स्पष्ट कीजिए कथन का आशय है कि कवि को भाषा का उपयोग सहजता और कुशलता से करना सीखना चाहिए। भाव के अनुरूप शब्द चुनने चाहिए, ताकि बात अपनी स्वाभाविक शक्ति के साथ पाठक तक पहुँचे। भाषा पर अनावश्यक ज़ोर लगाने या कथ्य को उसके भीतर ठूँसने से संप्रेषण बाधित होता है। यहाँ सरलता का अर्थ भावहीनता नहीं, बल्कि कथ्य और भाषा के बीच सही तालमेल है।

चरण 3: निष्कर्ष इस पंक्ति में कृत्रिम और पेचीदा भाषा पर व्यंग्य करते हुए सहज, भावानुकूल तथा स्पष्ट भाषा के प्रयोग की आवश्यकता बताई गई है।

त्वरित सुझाव: आशय में सहूलियत का अर्थ केवल सुविधा न लिखिए; सहज शब्द-चयन, भावानुकूलता और स्पष्ट संप्रेषण तीनों को साथ समझाइए।

7(घ). बात की तुलना शरारती बच्चे से क्यों की गई है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कुँवर नारायण की कविता में बात विचार या भाव है और भाषा उसे व्यक्त करने का साधन है।
- शरारती बच्चे की उपमा बात की चंचलता, सहजता तथा उसके साथ अनावश्यक जोर-जबरदस्ती की विफलता को स्पष्ट करती है।

चरण 1: बच्चे और बात की समानता समझिए शरारती बच्चा खेलते समय सहज और सक्रिय रहता है, पर उसे कठोरता से नियंत्रित करने पर वह जिद करने लगता है। इसी प्रकार मन की सीधी बात स्वाभाविक भाषा में सरलता से व्यक्त हो सकती है। शब्दों की उलझन और अनावश्यक सजावट में उसे जबरन बाँधने पर वह लेखक के वश में नहीं रहती तथा उसका मूल आशय खो जाता है।

चरण 2: कविता के प्रसंग से संबंध जोड़िए कवि बात को प्रभावशाली बनाने के लिए भाषा को बार-बार घुमाता और कसता है। इससे बात बिगड़ जाती है। अंत में उसी बात का शरारती बच्चे की तरह खेलना और कवि से भाषा को सहूलियत से बरतने के विषय में पूछना उसके स्वतंत्र, सहज स्वभाव को उभारता है। यह मानवीकरण कवि की भाषाई जटिलता पर हल्का व्यंग्य भी करता है।

चरण 3: निष्कर्ष बात शरारती बच्चे जैसी है क्योंकि दोनों सहज व्यवहार में खुलते हैं, जबकि अनावश्यक दबाव से अड़ जाते हैं। उपमा सरल और स्वाभाविक अभिव्यक्ति का महत्त्व बताती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में बच्चे की सहजता और बात पर भाषा का दबाव जोड़िए; केवल दोनों को चंचल कहना पर्याप्त नहीं है।

8(क). निम्नलिखित काव्यांश पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: प्रभु प्रलाप सुनि कान, बिकल भए बानर निकर आइ गयउ हनुमान, जिमि करुना मंह बीर रस। काव्यांश के छंद और उसकी भाषा पर टिप्पणी कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- छंद की पहचान उसके चरणों, मात्राओं और तुक के विधान से की जाती है। सोरठा एक अर्द्धसम मात्रिक छंद है।
- तुलसीदास की रामचरितमानस की भाषा अवधी है; प्रसंगानुकूल शब्दावली उसके भावों को सजीव बनाती है।

चरण 1: छंद का विधान बताइए प्रस्तुत काव्यांश सोरठा छंद में है। इसमें चार चरण होते हैं। पहले और तीसरे चरण में 11-11 तथा दूसरे और चौथे चरण में 13-13 मात्राएँ होती हैं। पहले और तीसरे चरण के अंत में तुक होती है। यहाँ पहले चरण के अंत का 'कान' और तीसरे चरण के अंत का 'हनुमान' इसी तुक-साम्य को स्पष्ट करते हैं। सोरठे का मात्रा-क्रम दोहे के मात्रा-क्रम के विपरीत होता है।

चरण 2: भाषा के लक्षण स्पष्ट कीजिए काव्यांश की भाषा साहित्यिक अवधी है। 'सुनि', 'भए', 'आइ गयउ', 'जिमि' और 'मंह' जैसे प्रयोग उसकी क्षेत्रीय प्रकृति दिखाते हैं। भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण तथा भावानुकूल है। 'प्रलाप' और 'बिकल' राम तथा वानरों की व्याकुलता व्यक्त करते हैं। अनुप्रास से ध्वनि-सौंदर्य और 'जिमि' द्वारा की गई तुलना से कथन की चित्रात्मकता बढ़ती है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश 11, 13, 11, 13 मात्राओं वाले सोरठा छंद में है। इसकी भाषा अवधी है, जो सहज, लयात्मक, अलंकारयुक्त और भावानुकूल है।

त्वरित सुझाव: सोरठे में पहले चरण की 11 मात्राएँ याद रखिए और भाषा के लिए 'गयउ' तथा 'जिमि' जैसे अवधी शब्द उद्धृत कीजिए।

8(ख). अनुप्रास अलंकार के दो उदाहरण छाँटकर लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अनुप्रास अलंकार में एक ही व्यंजन-वर्ण की आवृत्ति से काव्य की ध्वनि में सुंदरता आती है।
- उदाहरण देते समय काव्यांश के शब्दों के साथ बार-बार आने वाला वर्ण भी बताना चाहिए; शब्दों के अर्थ की समानता आवश्यक नहीं है।

चरण 1: पहले उदाहरण में आवृत्ति पहचानिए पहला उदाहरण 'प्रभु प्रलाप' है। दोनों शब्दों के आरंभ में 'प्र' ध्वनि-समूह की पुनरावृत्ति है; उसमें 'प' और 'र' व्यंजन समान रूप से आए हैं। इस ध्वनि-साम्य से राम के करुण विलाप का कथन लयात्मक बनता है। ये दो अलग-अलग शब्द हैं, इसलिए यह एक पूरे शब्द की पुनरावृत्ति का उदाहरण नहीं, बल्कि वर्ण-साम्य का उदाहरण है।

चरण 2: दूसरे उदाहरण में आवृत्ति पहचानिए दूसरा उदाहरण 'बिकल भए बानर' है। 'बिकल' और 'बानर' में 'ब' वर्ण दोहराया गया है। बीच में आया 'भए' शब्द पूरे पदबंध का हिस्सा है; उसका पहला व्यंजन 'भ' है, इसलिए उसे 'ब' की पुनरावृत्ति का आधार नहीं बनाना चाहिए। 'बिकल' और 'बानर' का वर्ण-साम्य ही यहाँ अनुप्रास की पहचान के लिए पर्याप्त है।

चरण 3: निष्कर्ष अनुप्रास के दो उदाहरण हैं: 'प्रभु प्रलाप' में 'प्र' ध्वनि-समूह की आवृत्ति और 'बिकल भए बानर' में 'बिकल' तथा 'बानर' के 'ब' वर्ण की आवृत्ति।

त्वरित सुझाव: दोनों पदबंध लिखकर उनके दोहराए व्यंजन बताइए; 'भए' के 'भ' को 'ब' न मानिए।

8(ग). हनुमान् के आगमन को 'करुण रस में वीर रस का आगमन' क्यों कहा गया है? इसका सौंदर्य स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- करुण रस का स्थायी भाव शोक और वीर रस का स्थायी भाव उत्साह है। प्रसंग के परिवर्तन से दोनों भावों का प्रभाव स्पष्ट होता है।
- लक्ष्मण की मूर्च्छा के समय राम का विलाप करुण वातावरण बनाता है; हनुमान का आगमन आशा, साहस और सक्रियता का संचार करता है।

चरण 1: करुण वातावरण स्पष्ट कीजिए लक्ष्मण को मूर्च्छित देखकर राम व्याकुल होकर विलाप कर रहे हैं। राम का प्रलाप सुनकर वानर-समूह भी दुखी और बेचैन हो जाता है। अपने प्रिय की रक्षा न कर पाने की पीड़ा और उसे खो देने की आशंका से पूरा वातावरण शोकमय है। इसीलिए यहाँ करुण रस की प्रधानता दिखाई देती है।

चरण 2: हनुमान के आगमन का प्रभाव समझाइए ऐसे समय हनुमान संजीवनी के लिए औषधि-पर्वत लेकर आते हैं। उनका साहसपूर्ण कार्य लक्ष्मण के जीवन की आशा जगाता है और निराश वानरों में उत्साह भरता है। हनुमान स्वयं पराक्रम और कर्मशीलता के प्रतीक हैं। उनके आने की तुलना करुण रस में वीर रस के आने से करके कवि ने शोक से आशा की ओर होते भाव-परिवर्तन को सजीव कर दिया है। 'जिमि' इस सुंदर उपमा को स्पष्ट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष शोकाकुल राम और वानरों के बीच हनुमान के आगमन से आशा तथा उत्साह जागते हैं। इसी भाव-परिवर्तन को करुण रस में वीर रस के आगमन की सुंदर उपमा दी गई है।

त्वरित सुझाव: पहले राम और वानरों का शोक लिखिए, फिर हनुमान से जागी आशा; इन्हीं से दोनों रसों का संबंध स्पष्ट होगा।

अथवा

8(क). अथवा (रुबाइयाँ काव्यांश पर आधारित प्रश्न): ये पंक्तियाँ किस छंद में लिखी गई हैं? छंद की विशेषता बताइए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रुबाई उर्दू-फ़ारसी काव्य-परंपरा का चार पंक्तियों वाला मुक्तक है, जिसमें एक स्वतंत्र भाव या विचार व्यक्त होता है।
- रुबाई की पहचान पंक्तियों की संख्या, तुक-व्यवस्था तथा निर्धारित छंद-लय से होती है; केवल चार पंक्तियाँ होना पर्याप्त नहीं है।

चरण 1: छंद की पहचान बताइए प्रस्तुत पंक्तियाँ रुबाई छंद में लिखी गई हैं। फ़िराक़ गोरखपुरी की पाठ्यपुस्तक में संकलित रुबाइयाँ इसी काव्य-रूप का प्रयोग करती हैं। प्रत्येक रुबाई में चार पंक्तियाँ होती हैं और वह एक स्वतंत्र इकाई के रूप में अपने भाव को पूर्ण करती है। छोटी-सी रचना में किसी दृश्य, अनुभूति या विचार को प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करना इसकी विशेषता है।

चरण 2: तुक और लय का विधान स्पष्ट कीजिए रुबाई की पहली, दूसरी और चौथी पंक्तियाँ सामान्यतः तुकांत होती हैं; तीसरी पंक्ति की तुक अलग हो सकती है। इसका तुक-क्रम अ-अ-ब-अ के रूप में समझा जा सकता है। यह उर्दू-फ़ारसी छंद-विधान के निश्चित वज़्न में लिखी जाती है। अंतिम पंक्ति प्रायः पहले से विकसित भाव को प्रभावपूर्ण परिणति देती है और पूरी रचना का आशय स्पष्ट कर देती है।

चरण 3: निष्कर्ष ये पंक्तियाँ रुबाई छंद की हैं। इसकी मुख्य विशेषताएँ चार पंक्तियाँ, पहली-दूसरी-चौथी पंक्तियों में तुक, निश्चित लय और एक स्वतंत्र पूर्ण भाव हैं।

त्वरित सुझाव: रुबाई के उत्तर में चार पंक्तियों के साथ पहली, दूसरी और चौथी की तुक अवश्य बताइए; उसे दोहा न लिखिए।

8(ख). पंक्तियों की भाषा की दो विशेषताएँ बताइए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़िराक़ गोरखपुरी की रुबाइयों में घरेलू जीवन तथा मानवीय भावों को सहज हिंदुस्तानी भाषा में व्यक्त किया गया है।
- भाषा की विशेषता बताते समय शब्द-चयन और अभिव्यक्ति के प्रभाव को उदाहरण सहित स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: बोलचाल की सरलता स्पष्ट कीजिए पहली विशेषता सरल, स्वाभाविक और बोलचाल की हिंदुस्तानी भाषा है। इसमें हिंदी के प्रचलित शब्दों के साथ उर्दू-फ़ारसी से आए शब्द सहजता से मिलते हैं। ‘आईने’ के साथ ‘चाँद’, ‘उतर’ और ‘आया’ का प्रयोग इसी मेल को दिखाता है। ‘देख’ जैसा संबोधन कथन को सीधे बातचीत का रूप देता है, जिससे माँ-बच्चे का घरेलू प्रसंग आत्मीय लगता है।

चरण 2: चित्रात्मकता और भावानुकूलता बताइए दूसरी विशेषता चित्रात्मक तथा भावानुकूल अभिव्यक्ति है। ‘देख आईने में चाँद उतर आया है’ कहने से चाँद का प्रतिबिंब आँखों के सामने साकार हो जाता है। कवि कठिन व्याख्या के बजाय परिचित वस्तुओं और छोटी, सहज वाक्य-रचना से दृश्य तथा बालमन की कल्पना व्यक्त करता है। इस भाषा में कोमलता और आत्मीयता है, जो वात्सल्य के भाव को प्रभावपूर्ण बनाती है।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्तियों की भाषा सरल बोलचाल की हिंदुस्तानी है, जिसमें हिंदी-उर्दू शब्दों का सहज मेल है। वह चित्रात्मक और भावानुकूल भी है, जिससे घरेलू दृश्य और वात्सल्य सजीव होते हैं।

त्वरित सुझाव: एक विशेषता शब्दावली की और दूसरी अभिव्यक्ति की लिखिए; ‘आईने में चाँद’ से दोनों के उदाहरण मिलते हैं।

8(ग). भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए — 'देख आईने में चाँद उतर आया है'। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़िराक़ की रुबाई में माँ और बच्चे के आत्मीय संबंध के माध्यम से वात्सल्य का स्वाभाविक चित्र प्रस्तुत हुआ है।
- बच्चे की भोली इच्छा को समझकर माँ कल्पना और सूझबूझ से उसका मन बहलाती है। चाँद का प्रतिबिंब इस भाव को मूर्त बनाता है।

चरण 1: बच्चे की इच्छा और माँ का उपाय समझें बच्चा आकाश में चमकते चाँद को देखकर उसे पाने की ज़िद करता है। माँ जानती है कि वास्तविक चाँद को धरती पर लाकर बच्चे को देना संभव नहीं है। फिर भी वह उसकी इच्छा को कठोरता से दबाती नहीं, बल्कि दर्पण में चाँद का प्रतिबिंब दिखाती है और कहती है कि देखो, चाँद आईने में उतर आया है।

चरण 2: पंक्ति में निहित वात्सल्य स्पष्ट करें माँ बच्चे की कल्पना के अनुरूप बात करके उसे प्रसन्न करती है। बच्चे के लिए प्रतिबिंब भी चाँद को अपने पास पा लेने का सुख देता है। इस सहज दृश्य में बालक की निश्छलता, माँ की ममता तथा बालमन की समझ एक साथ व्यक्त हैं। दूर आकाश के चाँद का आईने में पास आ जाना बच्चे की इच्छा और माँ के स्नेह का सुंदर मेल है।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्ति का भाव-सौंदर्य बच्चे की भोली ज़िद को स्नेहपूर्वक शांत करने में है। दर्पण में चाँद दिखाती माँ की सूझबूझ और वात्सल्य इस साधारण घरेलू दृश्य को अत्यंत आत्मीय बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: भाव-सौंदर्य लिखते समय चाँद के प्रतिबिंब से आगे बढ़कर बच्चे की निश्छलता और माँ की ममता का संबंध अवश्य स्पष्ट करें।

9(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 'उषा' कविता के उस जादू को स्पष्ट कीजिए जो सूर्योदय के साथ टूटता है। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शमशेर बहादुर सिंह की 'उषा' कविता सूर्योदय से पहले आकाश के पल-पल बदलते रंगों को दृश्य बिंबों में प्रस्तुत करती है।
- यहाँ 'जादू' प्रकृति के रहस्यमय और सम्मोहक सौंदर्य का संकेत है। घरेलू जीवन तथा मानवीय सौंदर्य के उपमान इस दृश्य को सजीव बनाते हैं।

चरण 1: उषाकाल के बदलते बिंब पहचानें सूर्योदय से पहले आकाश कभी नीले शंख जैसा दिखाई देता है और कभी राख से लीपे हुए गीले चौके जैसा। उसमें उभरती लालिमा को कवि बहुत काली सिल पर घुली थोड़ी-सी लाल केसर के रूप में देखता है। कहीं वह लाल खड़िया से मल दी गई स्लेट-सा प्रतीत होता है। इस प्रकार नीले, धूसर और लाल रंगों के बदलते संयोजन साधारण आकाश को अद्भुत चित्र में बदल देते हैं।

चरण 2: आकर्षक दृश्य का जादू समझें आगे नीले जल में झिलमिलाती किसी की गोरी देह का बिंब उभरता है। आकाश के रंगों और प्रकाश की कोमल आभा में प्रकृति सजीव तथा मानवीय लगने लगती है। दर्शक इन बदलते रूपों में इतना रम जाता है कि उसे पूरा दृश्य किसी जादुई परिवर्तन जैसा अनुभव होता है। जादू का आशय किसी अलौकिक घटना से नहीं, उषा के इस मोहक और क्षण-क्षण बदलते रूप से है।

चरण 3: सूर्योदय से होने वाला परिवर्तन स्पष्ट करें सूरज निकलने पर उसका स्पष्ट और तेज़ प्रकाश फैल जाता है। तब भोर की धुँधली रंग-छायाएँ तथा उनके कारण बनते कल्पनापूर्ण रूप मिटने लगते हैं। उषाकाल का क्षणिक रहस्य समाप्त होकर परिचित दिन का उजाला सामने आता है; इसी परिवर्तन को कवि जादू का टूटना कहता है।

चरण 4: निष्कर्ष उषा का जादू सूर्योदय से पहले आकाश के कोमल, रंगीन और निरंतर बदलते सौंदर्य में है। सूर्य निकलते ही ये सम्मोहक रंग-रूप स्पष्ट प्रकाश में विलीन हो जाते हैं और जादू टूट जाता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले उषा के दो-तीन बिंब दें, फिर बताएँ कि सूर्योदय का स्पष्ट प्रकाश उनकी रहस्यमय रंग-छायाओं को कैसे समाप्त करता है।

9(ख). 'बच्चन' के गीत के आधार पर उन स्थितियों को स्पष्ट कीजिए जिनके कारण पथिक जल्दी चलता है। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हरिवंश राय बच्चन का 'एक गीत' समय के तेज़ी से बीतने तथा अपने गंतव्य तक पहुँचने की उत्कंठा को व्यक्त करता है।
- यात्रा के बाहरी कारणों के साथ अपनत्व और किसी की प्रतीक्षा का भाव भी गति को प्रेरित करता है; पक्षियों का प्रसंग इस भाव को स्पष्ट करता है।

चरण 1: दिन ढलने की चिंता समझें पथिक देखता है कि दिन जल्दी-जल्दी ढल रहा है। उसे आशंका होती है कि कहीं रास्ते में ही रात न हो जाए। अँधेरा होने से पहले यात्रा पूरी कर लेना उसके लिए आवश्यक है। समय कम बचने की यही चेतना उसे अपनी चाल तेज़ करने को प्रेरित करती है। यहाँ ढलता दिन प्रतीक्षा नहीं करता, इसलिए पथिक को अपनी गति बढ़ानी पड़ती है।

चरण 2: मंज़िल की निकटता का प्रभाव बताएँ पथिक की मंज़िल भी अब दूर नहीं रह गई है। निकट आते लक्ष्य तक पहुँचने की आशा उसमें उत्साह भर देती है। वह दिनभर चलने के कारण थका हुआ है, फिर भी अंतिम दूरी शीघ्र पूरी करना चाहता है। कविता का 'दिन का थका पंथी भी जल्दी-जल्दी चलता है' कहना इसी बात को रेखांकित करता है कि लक्ष्य की निकटता उसकी थकान पर भारी पड़ती है।

चरण 3: अपनत्व की प्रेरणा का संदर्भ दें गीत में नीड़ों में प्रतीक्षा करते बच्चों का ध्यान चिड़ियों के पंखों में चंचलता भर देता है। यह समानांतर प्रसंग बताता है कि अपने प्रियजनों से मिलने की उत्कंठा भी घर की ओर लौटने की गति बढ़ाती है। पथिक के प्रसंग के सीधे कारण रात पड़ने की आशंका और पास आई मंज़िल हैं; चिड़ियों का प्रसंग पूरे गीत में मिलन और प्रतीक्षा की प्रेरणा को विस्तार देता है।

चरण 4: निष्कर्ष दिन का शीघ्र ढलना, रास्ते में रात हो जाने की आशंका और मंज़िल का निकट होना थके पथिक को भी तेज़ चलने के लिए प्रेरित करते हैं। गीत में अपनत्व और मिलन की उत्कंठा इस प्रेरणा को भावात्मक आधार देती है।

त्वरित सुझाव: पथिक के लिए 'ढलता दिन—रात की आशंका—निकट मंज़िल' का क्रम रखें; प्रतीक्षारत बच्चों का उदाहरण देते समय उसे चिड़ियों से जोड़ें।

9(ग). चौकोने छोटे खेत को कवि ने काग़ज़ का पत्रा क्यों कहा है? उस खेत में 'रोपाई क्षण की कटाई अनंतता की' कैसे है? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उमाशंकर जोशी की कविता में खेत और खेती का रूपक काव्य-रचना की प्रक्रिया को समझाता है। काग़ज़ खेत है और उस पर विकसित होने वाली कविता उसकी फसल है।
- क्षणिक अनुभव अथवा प्रेरणा से जन्मी श्रेष्ठ कविता का रस समय के साथ समाप्त नहीं होता; पाठक बार-बार उसका आनंद प्राप्त करते हैं।

चरण 1: काग़ज़ और खेत की समानता समझें कवि का छोटा चौकोना खेत काग़ज़ का पन्ना है, क्योंकि इसी सीमित स्थान पर उसके भाव और विचार शब्दों का रूप लेते हैं। जैसे खेत में बीज अंकुरित होकर पौधे और फसल बनते हैं, वैसे ही भाव का बीज काग़ज़ पर शब्दों के अंकुरों और रचना के विकसित रूप में परिणत होता है। इस प्रकार आकार की समानता के साथ सृजन का स्थान होने की समानता भी खेत और काग़ज़ को जोड़ती है।

चरण 2: रोपाई के क्षण का अर्थ बताएँ किसी अनुभूति, घटना या भावावेग का एक क्षण कवि के भीतर रचना का बीज डाल देता है। कल्पना और संवेदना से यह बीज विकसित होता है। 'रोपाई क्षण की' इसी आरंभिक भाव-प्रेरणा की ओर संकेत करती है। इसका अर्थ यह नहीं कि कविता लिखने में कभी परिश्रम या समय नहीं लगता; यहाँ ध्यान उस क्षण पर है जिसमें सृजन की प्रेरणा जन्म लेती है।

चरण 3: अनंत कटाई का आशय स्पष्ट करें सामान्य खेत की फसल कट जाने पर समाप्त हो जाती है, किंतु कविता की रसपूर्ण फसल का आनंद लेने से वह चुकती नहीं। अलग-अलग समय के असंख्य पाठक उसे पढ़कर नई अनुभूति और आनंद प्राप्त कर सकते हैं। बार-बार पढ़ने पर भी उसकी अर्थ-संपदा और भाव-सौंदर्य बने रहते हैं। इसलिए साहित्यिक फसल की कटाई अर्थात् रसास्वादन अनंत काल तक चल सकता है।

चरण 4: निष्कर्ष काग़ज़ भावों और शब्दों की फसल उगाने वाला छोटा खेत है। प्रेरणा का बीज किसी क्षण पड़ता है, पर उससे बनी श्रेष्ठ कविता का रस पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्राप्त होता रहता है; यही 'रोपाई क्षण की कटाई अनंतता की' का आशय है।

त्वरित सुझाव: रूपक के तीन संबंध याद रखें: काग़ज़—खेत, भाव—बीज और कविता—रस की फसल; फिर भौतिक फसल तथा काव्य-रस के अंतर से अनंत कटाई समझाएँ।

10(क). नीचे दिए हुए गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: फूलों की कोमलता देखकर परवर्ती कवियों ने समझा कि उसका सब-कुछ कोमल है! यह भूल है। इसके फल इतने मज़बूत होते हैं कि नए फूलों के निकल आने पर भी स्थान नहीं छोड़ते। जब तक नए फल-पत्ते मिलकर, धकियाकर उन्हें बाहर नहीं कर देते तब तक वे डटे रहते हैं। वसंत के आगमन के समय जब सारी वनस्थली पुष्प-पत्र से मर्मरित होती रहती है, शिरीष के पुराने फल बुरी तरह खड़खड़ाते रहते हैं। मुझे इनको देखकर उन नेताओं की बात याद आती है, जो किसी प्रकार ज़माने का रुख नहीं पहचानते और जब तक नई पौध के लोग उन्हें धक्का मारकर निकाल नहीं देते, तब तक जमे रहते हैं। गद्यांश में किस वनस्पति की चर्चा हुई है? उसके बारे में कवियों की किस धारणा को लेखक ग़लत ठहरा रहा है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में वनस्पति के अलग-अलग अंगों के गुणों का अंतर स्पष्ट किया गया है। किसी एक अंग का गुण पूरे वृक्ष पर लागू करना उचित नहीं है।
- लेखक कवियों की धारणा को शिरीष के फूलों और फलों की तुलना द्वारा जाँचता है; उत्तर का आधार इसी गद्यांश के प्रत्यक्ष कथन हैं।

चरण 1: वर्णित वनस्पति पहचानें गद्यांश में शिरीष नामक वृक्ष की चर्चा हुई है। उसके फूल अत्यंत कोमल हैं। फूलों की यही कोमलता कवियों को आकर्षित करती रही है। प्रश्न में वनस्पति की पहचान पूछी गई है, इसलिए स्पष्ट रूप से शिरीष का नाम लिखना आवश्यक है।

चरण 2: कवियों की धारणा और उसका खंडन बताएँ परवर्ती कवियों ने शिरीष के फूलों की कोमलता देखकर मान लिया कि उसका सब-कुछ कोमल है। लेखक इस सामान्यीकरण को गलत ठहराता है। वह बताता है कि शिरीष के फल इतने मज़बूत होते हैं कि नए फूल निकल आने पर भी अपनी जगह नहीं छोड़ते। नए फल-पत्ते जब उन्हें धकियाकर बाहर कर देते हैं, तभी वे हटते हैं। पुराने फलों का वसंत में भी खड़खड़ाते रहना उनकी कठोरता और टिके रहने का प्रमाण है।

चरण 3: निष्कर्ष वनस्पति शिरीष है। लेखक इस धारणा का खंडन करता है कि फूलों की तरह शिरीष का हर अंग कोमल है, क्योंकि उसके फल कठोर, मज़बूत और लंबे समय तक शाखाओं पर टिके रहने वाले हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर को 'शिरीष का नाम—कवियों की धारणा—कठोर फलों से खंडन' के क्रम में लिखें; फूलों और फलों के गुणों को न मिलाएँ।

10(ख). शिरीष के फलों की क्या विशेषता है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिरीष के फूल में फूलों की कोमलता और फलों की कठोरता का विरोध दिखाया गया है। फूल देखकर पूरे वृक्ष को कोमल मान लेना ठीक नहीं है।
- गद्यांश में फलों का डालियों से दृढ़ता से चिपके रहना और नए पत्तों के आने पर भी न गिरना उनकी मुख्य विशेषता है।

चरण 1: फूल और फल का अंतर पहचानिए शिरीष के फूल अत्यंत कोमल होते हैं, पर उसके फल बहुत मजबूत और कठोर होते हैं। इसलिए फूलों की प्रकृति के आधार पर फलों को भी कोमल समझना भूल है। लेखक ने इस विरोध के द्वारा फल की अलग प्रकृति स्पष्ट की है।

चरण 2: डालियों पर टिके रहने की विशेषता समझिए नए फूल और पत्ते निकल आने पर भी पुराने फल अपने आप जगह नहीं छोड़ते।

वे डालियों पर खड़खड़ाते हुए अटके रहते हैं। जब नए फल-पत्ते मिलकर उन्हें धक्का देकर बाहर करते हैं, तभी वे गिरते हैं। वसंत की नई हरियाली के बीच भी उनका इस प्रकार टिके रहना उनकी कठोरता और जिद्दीपन को प्रकट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष शिरीष के फल कठोर और मजबूत होते हैं। वे नए फूल-पत्तों के आने पर भी डालियों से चिपके रहते हैं तथा नए फल-पत्तों द्वारा हटाए जाने पर ही गिरते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में फूलों की कोमलता के साथ फलों की कठोरता और पुराने फलों के न झड़ने का स्पष्ट अंतर लिखिए।

10(ग). लेखक को कुछ नेताओं की याद क्यों आ जाती है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लेखक प्राकृतिक दृश्य के माध्यम से मनुष्य के व्यवहार पर व्यंग्य करता है। पुराने फल परिवर्तन को स्वीकार न करने की प्रवृत्ति का प्रतीक बनते हैं।
- पुराने नेताओं और शिरीष के पुराने फलों में समानता अपना स्थान स्वयं न छोड़ने की है।

चरण 1: पुराने फलों का व्यवहार देखिए शिरीष के पुराने फल नए पत्तों और फूलों के आने के बाद भी डालियों पर जमे रहते हैं। नए फल-पत्ते जब तक उन्हें धक्का देकर अलग नहीं कर देते, वे स्वयं अपनी जगह नहीं छोड़ते। लेखक को इनमें बदलते समय की अनदेखी करने की प्रवृत्ति दिखाई देती है।

चरण 2: नेताओं से समानता स्पष्ट कीजिए कुछ पुराने नेता भी समय का बदला हुआ रुख नहीं पहचानते और अपने पद से चिपके रहते हैं। नई पीढ़ी के लिए स्वेच्छा से स्थान बनाने के बजाय वे तब तक जमे रहते हैं, जब तक युवा लोग उन्हें हटाने के लिए मजबूर नहीं कर देते। इसी जिद और पदासक्ति के कारण लेखक को शिरीष के फलों को देखकर ऐसे नेताओं की याद आती है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक को कुछ नेताओं की याद इसलिए आती है कि वे शिरीष के पुराने फलों की तरह अपना स्थान छोड़ना नहीं चाहते और नई पीढ़ी द्वारा हटाए जाने तक पद पर जमे रहते हैं।

त्वरित सुझाव: फल और नेता की तुलना में दो बातें जोड़िए: समय का परिवर्तन न पहचानना और हटाए जाने तक जगह न छोड़ना।

10(घ). वसंत ऋतु में वनस्थली के सौंदर्य और उस पर शिरीष के अटपटेपन पर प्रकाश डालिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में वसंत की वनस्थली का चित्र नई पत्तियों, फूलों और हरीतिमा के माध्यम से प्रस्तुत है। इससे प्रकृति की नवीनता व्यक्त होती है।
- शिरीष के पुराने फलों का उसी समय खड़खड़ाते रहना इस सुंदर वातावरण से असंगत लगता है। यही उसका अटपटापन है।

चरण 1: वसंत का प्राकृतिक सौंदर्य बताइए वसंत आते ही सारी वनस्थली नए पत्तों और पुष्पों से भर जाती है। हर ओर हरीतिमा छा जाती है और प्रकृति में ताजगी तथा नवीनता दिखाई देती है। फूलों और पल्लवों से सजा यह वातावरण जीवन के उल्लास का अनुभव कराता है। गद्यांश में इसी दृश्य को पुष्प-पत्रों से मर्मरित होती वनस्थली के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

चरण 2: शिरीष की असंगति स्पष्ट कीजिए ऐसे सुंदर और नएपन से भरे वातावरण में शिरीष के पुराने फल अब भी डालियों पर अटके रहते हैं। उनकी खड़खड़ाहट वसंत के कोमल, मनोहर रूप के साथ मेल नहीं खाती। चारों ओर नई पत्तियाँ और फूल हैं, पर ये पुराने कठोर फल अपनी जगह नहीं छोड़ते; इसलिए उनका टिके रहना अटपटा लगता है।

चरण 3: निष्कर्ष वसंत में वनस्थली फूलों और नए पत्तों से सुंदर बन जाती है, लेकिन शिरीष के पुराने फल खड़खड़ाते हुए उसी तरह

लटके रहते हैं। यही दृश्य उसके अटपटेपन को स्पष्ट करता है।

त्वरित सुझाव: पहले वसंत के नए फूल-पत्तों का सौंदर्य लिखिए, फिर उनके बीच पुराने फलों की खड़खड़ाहट का विरोध दिखाइए।

अथवा

10(क). अथवा (नमक गद्यांश पर आधारित प्रश्न): कहानी में नमक की पुड़िया इतनी महत्त्वपूर्ण क्यों हो गई है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नमक कहानी में साधारण वस्तु मानवीय प्रेम और जन्मभूमि की स्मृति का प्रतीक बन जाती है। उसका महत्त्व कीमत से नहीं, उससे जुड़े संबंध से है।
- विभाजन से बनी राजनीतिक सीमा के बावजूद लोगों का अपने पुराने वतन से भावनात्मक लगाव बना रहता है।

चरण 1: सिख बीबी की इच्छा का आधार समझिए सिख बीबी को लाहौर से गहरा लगाव था। भारत में रहते हुए भी वे लाहौर को अपना वतन मानती थीं। उन्होंने सफ़िया से लाहौरी नमक लाने को कहा। इसलिए नमक की पुड़िया उनके लिए खाने की साधारण वस्तु से बढ़कर अपने पुराने घर और जन्मभूमि की याद से जुड़ी निशानी बन गई।

चरण 2: पुड़िया से जुड़े मानवीय संबंध स्पष्ट कीजिए सफ़िया के लिए पुड़िया उस आत्मीय स्त्री से किया गया वादा पूरा करने का माध्यम थी। उसे सीमा के पार पहुँचाने में प्रेम, भरोसा और अपनापन जुड़ गए। कस्टम की रोक के सामने भी इस भावना का मूल्य बना रहा। इस प्रकार छोटी-सी पुड़िया ने दिखाया कि देशों की सरहदें लोगों की स्मृतियों और आपसी स्नेह को पूरी तरह बाँट नहीं सकतीं।

चरण 3: निष्कर्ष नमक की पुड़िया सिख बीबी के वतन-प्रेम, उनकी स्मृतियों तथा सफ़िया की आत्मीयता की निशानी बन गई थी। इसी भावनात्मक और मानवीय महत्त्व के कारण वह कहानी के केंद्र में आ गई।

त्वरित सुझाव: पुड़िया का महत्त्व समझाते समय उसकी कीमत के बजाय सिख बीबी का लाहौर से लगाव और सफ़िया का वादा जोड़िए।

10(ख). सफ़िया ने कस्टम अफ़सर को इस पुड़िया के बारे में क्या बताया होगा? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नमक कहानी का यह प्रश्न पात्र की परिस्थिति और भावना के आधार पर उसके संभावित कथन को स्पष्ट करने के लिए है।
- लाहौरी नमक की पुड़िया के पीछे सिख बीबी की जन्मभूमि की स्मृति और सफ़िया द्वारा निभाया जा रहा आत्मीय वादा है।

चरण 1: पुड़िया किसके लिए थी, बताइए सफ़िया ने कस्टम अफ़सर को बताया होगा कि यह थोड़ा-सा लाहौरी नमक एक सिख बीबी के लिए है, जो भारत में रहती हैं। विभाजन के बाद वहाँ बस जाने पर भी वे लाहौर को अपना वतन मानती हैं। उन्होंने सफ़िया से अपने लिए लाहौर का नमक लाने का अनुरोध किया था।

चरण 2: लाने का भावनात्मक उद्देश्य स्पष्ट कीजिए उसने यह भी बताया होगा कि बीबी से उसे बहुत आत्मीयता अनुभव हुई और उसने उनकी इच्छा पूरी करने का वादा किया था। यह नमक व्यापार या लाभ के लिए नहीं, उस स्त्री के पुराने वतन की याद के रूप में ले जाया जा रहा है। इस छोटी पुड़िया से बीबी की भावनाएँ और उसका अपना वादा जुड़े हैं; इसलिए वह इसे उन तक पहुँचाना चाहती है।

चरण 3: निष्कर्ष सफ़िया ने बताया होगा कि पुड़िया भारत में रहने वाली एक सिख बीबी की माँग पर लाया गया लाहौरी नमक है। यह उनके वतन की याद और उनसे किए गए अपने वादे को निभाने का प्रतीक है।

त्वरित सुझाव: संभावित कथन लिखते हुए नमक पाने वाली सिख बीबी, उनका लाहौर-प्रेम और सफ़िया का वादा अवश्य स्पष्ट कीजिए।

10(ग). आशय स्पष्ट कीजिए — "मुहब्बत तो कस्टम से इस तरह गुज़र जाती है कि कानून हैरान रह जाता है।" [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कथन का आशय है कि सच्चा मानवीय प्रेम राजनीतिक सीमाओं और कानूनी प्रतिबंधों से अधिक गहरा होता है।
- कानून के हैरान होने में मानवीकरण है। नियमों से बँधे अधिकारी भी प्रेम और वतन की स्मृति से प्रभावित हो जाते हैं।

चरण 1: कथन का भाव स्पष्ट कीजिए कस्टम व्यवस्था वस्तुओं के एक देश से दूसरे देश जाने को नियमों से नियंत्रित करती है, लेकिन मनुष्य की मुहब्बत को सरहदों में नहीं बाँधा जा सकता। प्रेम किसी वस्तु को केवल सामान नहीं रहने देता; उसमें किसी अपने की स्मृति और आत्मीय संबंध का अर्थ जुड़ जाता है। इसलिए सच्ची भावना कठोर दिखाई देने वाली बाधाओं को भी पार कर जाती है।

चरण 2: नमक की पुड़िया के प्रसंग से जोड़िए सफ़िया की पुड़िया में सिख बीबी के लिए लाहौर का नमक था। उससे बीबी का वतन-प्रेम और सफ़िया का अपनापन जुड़ा था। इस भावना को समझकर कस्टम अधिकारियों का मानवीय पक्ष सामने आता है और पुड़िया सीमा पार पहुँच पाती है। कानून का हैरान रह जाना इसी बात का संकेत है कि प्रेम के प्रभाव को केवल नियमों के आधार पर नहीं समझा जा सकता।

चरण 3: निष्कर्ष आशय यह है कि सच्ची मुहब्बत मनुष्यों को जोड़ती है और सरहदों की कठोर बाधाओं पर भी प्रभाव डालती है। नमक की पुड़िया का पार होना इसी मानवीय आत्मीयता की विजय को व्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: आशय में प्रेम की व्यापकता बताकर उसे नमक की पुड़िया और अधिकारियों की मानवीय संवेदना से अवश्य जोड़िए।

10(घ). कस्टम-अधिकारी के कथन — 'सब रफ़्ता-रफ़्ता ठीक हो जाएगा' से आप कहाँ तक सहमत हैं? क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'नमक' कहानी में राजनीतिक विभाजन के बावजूद लोगों का अपने पुराने वतन से भावनात्मक संबंध बना रहता है।
- कस्टम-अधिकारी का कथन भारत-पाकिस्तान के बीच कटुता घटने और मानवीय संबंध सुधरने की आशा व्यक्त करता है।

चरण 1: कथन से सहमति का आधार बताइए मैं अधिकारी के कथन से इस अर्थ में सहमत हूँ कि प्रेम और अपनापन धीरे-धीरे अविश्वास को कम कर सकते हैं। सफ़िया लाहौर से नमक लाकर सिख बीबी की इच्छा पूरी करना चाहती है। दोनों ओर के अधिकारियों की सहानुभूति दिखाती है कि सीमा और अलग नागरिकता के बावजूद लोग एक-दूसरे की भावनाएँ समझते हैं। पुराने वतन की स्मृतियाँ उनके हृदय में अब भी जीवित हैं।

चरण 2: सुधार की आवश्यक शर्त स्पष्ट कीजिए फिर भी केवल समय बीतने से सभी समस्याएँ अपने-आप समाप्त नहीं होंगी। इसके लिए दोनों ओर सद्भाव, संवाद और परस्पर विश्वास बढ़ाने का प्रयास आवश्यक है। कहानी की घटनाएँ इसी संभावना को पुष्ट करती हैं कि मनुष्यों के बीच आत्मीय व्यवहार विभाजन से उपजी दूरी को कम कर सकता है। इसलिए अधिकारी की आशा उचित है, पर उसकी पूर्ति मानवीय प्रयासों पर निर्भर करती है।

चरण 3: निष्कर्ष अधिकारी के आशावाद से सहमत हुआ जा सकता है, क्योंकि साझा स्मृतियाँ और प्रेम संबंधों को फिर जोड़ सकते हैं; इसके साथ सद्भावपूर्ण प्रयास भी आवश्यक हैं।

त्वरित सुझाव: सहमति के साथ उसका कारण लिखिए और नमक लाने तथा अधिकारियों की सहानुभूति के प्रसंग से उसे पुष्ट कीजिए।

11(क). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए: 'काले मेघा पानी दे' के आधार पर लिखिए कि जीजी ने इंदर सेना पर पानी फेंके जाने को कैसे सही ठहराया। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'काले मेघा पानी दे' में जीजी की लोक-आस्था का आधार त्याग, दान और सामूहिक मंगल की भावना है।
- पानी की कमी में इंदर सेना पर पानी डालने को जीजी वर्षा के देवता के प्रति अर्पण और पानी का बीज बोने के समान मानती हैं।

चरण 1: लेखक की आपत्ति और जीजी का तर्क समझिए लेखक को सूखे के समय इंदर सेना पर पानी फेंकना दुर्लभ पानी की बरबादी लगता था। जीजी ने समझाया कि जिस वस्तु की कमी हो, उसी का दान अधिक महत्त्वपूर्ण होता है। अपने पास बची हुई आवश्यक वस्तु देने में सच्चा त्याग है। उनके अनुसार पानी की कमी में इंद्र को पानी अर्पित करने से इंद्र प्रसन्न होंगे और वर्षा देकर उसका फल लौटाएँगे। यह जीजी का लोकविश्वास है, जिसके द्वारा वे बच्चों पर पानी डालने को सार्थक ठहराती हैं।

चरण 2: बीज बोने के उदाहरण का आशय बताइए जीजी किसान का उदाहरण देती हैं। किसान अच्छी फसल पाने के लिए अपने पास का कुछ अनाज खेत में बीज के रूप में डालता है। देखने में वह अनाज मिट्टी में बिखेरना लगता है, पर उसी से कई गुना अन्न प्राप्त होता है। इसी तरह इंदर सेना पर डाला गया पानी उनके लिए पानी का बीज बोना है। थोड़े पानी का त्याग करके सबके लिए बहुत-सा पानी माँगा जाता है। इसलिए जीजी इसे केवल व्यक्तिगत लाभ का सौदा नहीं, बल्कि सारे गाँव के कल्याण की कामना से जुड़ा अर्पण मानती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष जीजी ने दुर्लभ वस्तु के दान, त्याग के फल और बीज बोकर अधिक पाने की उपमा के आधार पर इंदर सेना पर पानी डालने को उचित बताया।

त्वरित सुझाव: जीजी के उत्तर को 'कमी में दान', 'त्याग' और 'पानी का बीज' इन सूत्रों से जोड़िए; इसे वैज्ञानिक कारण के रूप में न लिखिए।

11(ख). बाज़ार का ज़ादू क्या है? उसके चढ़ने और उतरने पर मनुष्य पर क्या-क्या असर पड़ता है? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'बाज़ार दर्शन' में बाज़ार का जादू सजी हुई वस्तुओं का ऐसा आकर्षण है जो मनुष्य की इच्छाएँ बढ़ाकर उसके विवेक को प्रभावित करता है।
- अपनी वास्तविक आवश्यकता का ज्ञान मनुष्य को बाज़ार के आकर्षण से बचाता है; अनिश्चित चाह और भरा धनकोष उसे अनावश्यक खरीद की ओर खींच सकते हैं।

चरण 1: बाज़ार के जादू का स्वरूप बताइए सुंदर ढंग से सजाई गई विविध वस्तुओं को देखकर मनुष्य को लगता है कि सब उपयोगी और आवश्यक हैं। वस्तुओं की चमक-दमक आँखों के रास्ते मन को बाँध लेती है। यही बाज़ार का जादू है। विशेषतः जब व्यक्ति को अपनी आवश्यकता स्पष्ट नहीं होती, तब बाज़ार उसके भीतर नई इच्छाएँ जगा देता है। वह अपनी पहले की संतुष्टि भूलकर स्वयं को बहुत-सी वस्तुओं से वंचित अनुभव करने लगता है।

चरण 2: जादू चढ़ने और उतरने के प्रभाव अलग कीजिए जादू चढ़ने पर चीज़ें खरीदने का लोभ बढ़ता है और मनुष्य आवश्यकता तथा अनावश्यकता का भेद भूलने लगता है। वह सोचता है कि यह भी ले लूँ और वह भी ले लूँ। इस आकर्षण में अपनी सामर्थ्य के अनुसार बहुत-सा अनावश्यक सामान खरीद सकता है। जादू उतरने पर समझ में आता है कि खरीदी गई कई चीज़ों की आवश्यकता ही नहीं थी। आराम देने के लिए लाई गई वस्तुएँ उलटे बाधा और चिंता बन सकती हैं। तब व्यर्थ खर्च का पछतावा होता है और बाज़ार की चमक का खोखलापन सामने आता है।

चरण 3: निष्कर्ष बाज़ार का जादू वस्तुओं का मोहक आकर्षण है; उसके चढ़ने पर लोभ और अनावश्यक खरीद बढ़ते हैं तथा उतरने पर अनुपयोगिता का बोध और पछतावा होता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में क्रम रखिए: जादू का अर्थ, चढ़ने पर बढ़ता लोभ, उतरने पर पछतावा; अपनी आवश्यकता की स्पष्टता को बचाव का आधार बताइए।

11(ग). पहलवान लुट्टन सिंह को राजा साहब की कृपा-दृष्टि कब प्राप्त हुई? उससे पहलवान की दिनचर्या में क्या अंतर आया? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'पहलवान की ढोलक' में लुट्टन की कुश्ती-कला को राजा का संरक्षण मिलने से उसकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति बदलती है।
- राजा की कृपा का कारण मेले की कुश्ती में उसकी विजय थी; उसके बाद राज-दरबार में सम्मान और नियमित पोषण का अवसर मिला।

चरण 1: राजा की कृपा मिलने का प्रसंग लिखिए श्यामनगर के मेले में लुट्टन ने प्रसिद्ध पहलवान चाँद सिंह को चुनौती दी। चाँद सिंह 'शेर के बच्चे' के नाम से जाना जाता था और उसकी शक्ति से लोग प्रभावित थे। आरंभ में लुट्टन की चुनौती पर किसी को भरोसा नहीं हुआ, पर उसने ढोलक की ताल से प्रेरणा लेकर संघर्ष किया और चाँद सिंह को हरा दिया। इस अप्रत्याशित विजय से राजा साहब प्रसन्न हुए। उन्होंने लुट्टन की वीरता और कुश्ती-कला का सम्मान किया तथा उसे राज-पहलवान के रूप में आश्रय दिया।

चरण 2: संरक्षण मिलने के बाद का परिवर्तन बताइए राजा का आश्रय मिलने पर लुट्टन के भोजन और जीवन-निर्वाह की चिंता दूर हुई। उसे राज-दरबार से अच्छा भोजन और सम्मान मिलने लगा। अब उसकी दिनचर्या में पौष्टिक भोजन, व्यायाम, कुश्ती का अभ्यास और दरबार में उपस्थित होना शामिल हो गया। वह मेलों में कुश्ती लड़कर अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने लगा। आगे चलकर उसने अपने दोनों पुत्रों को भी पहलवानी सिखाई। इस प्रकार पहले सामान्य ग्रामीण युवक के रूप में रहने वाला लुट्टन सम्मानित राज-पहलवान बन गया और उसका जीवन व्यवस्थित तथा सुविधापूर्ण हो गया।

चरण 3: निष्कर्ष चाँद सिंह को हराने पर लुट्टन को राजा की कृपा मिली। राजकीय संरक्षण से उसके भोजन, अभ्यास और सम्मान की व्यवस्था हुई तथा उसकी दिनचर्या कुश्ती-कला के विकास पर केंद्रित हो गई।

त्वरित सुझाव: उत्तर के पहले भाग में 'श्यामनगर का मेला और चाँद सिंह पर विजय' तथा दूसरे में 'राजकीय भोजन, अभ्यास और सम्मान' लिखिए।

11(घ). जीवन की जद्दोजहद ने चार्ली चैप्लिन के व्यक्तित्व को कैसे संपन्न बनाया? पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'चार्ली चैप्लिन यानी हम सब' में चार्ली की कला का आधार उनके जीवन का संघर्ष और साधारण मनुष्य के दुःख से गहरी आत्मीयता है।
- अभाव और अपमान के अनुभवों ने उनकी कला में करुणा, हास्य तथा अन्याय के प्रति प्रतिरोध का अनूठा मेल पैदा किया।

चरण 1: संघर्ष से मिली संवेदनशीलता समझाइए चार्ली का बचपन गरीबी, असुरक्षा और पारिवारिक कठिनाइयों में बीता। माँ की बीमारी और जीवन-निर्वाह का संघर्ष उनके आरंभिक अनुभवों का हिस्सा थे। उन्होंने अभावग्रस्त मनुष्य की विवशता को निकट से जाना। इससे उनके भीतर गरीबों, उपेक्षितों और साधारण लोगों के प्रति गहरी करुणा उत्पन्न हुई। उनकी दृष्टि संपन्न और शक्तिशाली लोगों की दुनिया तक सीमित नहीं रही; वे उस मनुष्य की पीड़ा पहचान सके जो लगातार ठोकरें खाकर भी जीने का प्रयत्न करता है।

चरण 2: जीवनानुभव और कला का संबंध स्पष्ट कीजिए संघर्ष ने चार्ली को दुःख के भीतर भी हँसी की संभावना देखना सिखाया। पाठ में भूखे होने पर चुराकर खाए गए केले का प्रसंग और माँ के साथ निरीह भेड़ का प्रसंग उनकी भावनात्मक दुनिया को समझने में सहायक हैं। जीवन की ऐसी स्थितियों में हास्य और करुणा साथ उपस्थित होते हैं। उनकी फिल्मों का साधारण पात्र अपमान और असफलता झेलता है, पर जीने की इच्छा नहीं छोड़ता। इसीलिए चार्ली की हँसी केवल मनोरंजन नहीं करती; वह मानवीय पीड़ा से जोड़ती और अमानवीय व्यवस्था पर प्रश्न भी उठाती है।

चरण 3: निष्कर्ष जीवन की जद्दोजहद ने चार्ली को संवेदनशील, करुणाशील और जुझारू बनाया। उन्हीं अनुभवों से उनकी कला में हास्य और करुणा का वह मेल आया जिससे साधारण दर्शक अपने जीवन को पहचानता है।

त्वरित सुझाव: चार्ली के संघर्ष गिनाने के बाद उनका प्रभाव भी लिखिए: गरीबी से संवेदना, ठोकरों से जिजीविषा और दुःख से करुणामय हास्य।

11(ङ). जाति-प्रथा को श्रम-विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे भीमराव आंबेडकर के क्या तर्क थे? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आंबेडकर उपयोगी श्रम-विभाजन और जन्म पर आधारित जाति-व्यवस्था के बीच अंतर करते हैं।
- काम का बँटवारा व्यक्ति की योग्यता, रुचि और बदलती परिस्थितियों के अनुकूल होना चाहिए।

चरण 1: श्रम और श्रमिकों के विभाजन का अंतर समझिए सामान्य श्रम-विभाजन में समाज के आवश्यक कार्य बाँटे जाते हैं, किंतु जाति-प्रथा श्रमिकों को भी जन्म के आधार पर अलग-अलग श्रेणियों में बाँट देती है। इन श्रेणियों में ऊँच-नीच का भेद होता है। इसलिए यह केवल काम के सुव्यवस्थित बँटवारे की व्यवस्था नहीं, बल्कि मनुष्यों में असमानता स्थापित करने वाली व्यवस्था है।

चरण 2: योग्यता और स्वतंत्र चुनाव की उपेक्षा बताइए जाति-व्यवस्था व्यक्ति की निजी क्षमता, प्रशिक्षण अथवा रुचि देखकर पेशा निर्धारित नहीं करती। वह उसके माता-पिता की सामाजिक स्थिति और जन्म के आधार पर उसे एक विशेष काम से बाँधती है। व्यक्ति अपनी पसंद का काम नहीं चुन पाता; इस कारण उसकी प्रतिभा का विकास और श्रम की स्वाभाविक उपयोगिता बाधित होती है।

चरण 3: पेशा बदलने की बाधा का परिणाम समझाइए उद्योग और समाज की आवश्यकताएँ बदलने पर मनुष्य को अपना व्यवसाय बदलने की स्वतंत्रता चाहिए। जाति-प्रथा उसे पैतृक पेशे से बाँधे रखती है। इससे काम के अवसर होने पर भी बेरोजगारी बढ़ सकती है। थोपे गए काम के प्रति अरुचि और कुछ कामों के प्रति सामाजिक घृणा भी कार्यकुशलता को घटाती है।

चरण 4: निष्कर्ष आंबेडकर के अनुसार जाति-प्रथा श्रम-विभाजन के नाम पर जन्माधारित श्रमिक-विभाजन, ऊँच-नीच और पेशागत पराधीनता लागू करती है; इसलिए उसे उपयोगी श्रम-विभाजन का सामान्य रूप नहीं माना जा सकता।

त्वरित सुझाव: उत्तर में तीन भेद स्पष्ट रखिए: काम के साथ मनुष्यों का विभाजन, योग्यता के स्थान पर जन्म, और पेशा बदलने की स्वतंत्रता का अभाव।

12(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 'जूझ' कहानी के आधार पर ग्रामीण जीवन की तीन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'जूझ' में आनंदा के अनुभवों के माध्यम से ग्रामीण जीवन, खेती और शिक्षा के संघर्ष का चित्र मिलता है।
- जीवन की विशेषता बताते समय कहानी का संबंधित प्रसंग भी देना चाहिए।

चरण 1: खेती पर निर्भरता और कठोर श्रम बताइए ग्रामीण परिवारों की आजीविका मुख्यतः खेती और पशुपालन से जुड़ी है। खेतों में पानी देना, फसलों की देखभाल करना और पशुओं को चराना दैनिक जीवन का हिस्सा है। आनंदा को भी पढ़ाई छोड़कर खेती के काम में लगना पड़ता है। इससे स्पष्ट होता है कि परिवार के छोटे सदस्यों तक से श्रम की अपेक्षा की जाती है।

चरण 2: शिक्षा के मार्ग में बाधाएँ पहचानिए खेती के काम और परिवार की सोच के कारण बच्चों की पढ़ाई बाधित होती है। आनंदा का पिता पढ़ाई की अपेक्षा खेत के काम को अधिक उपयोगी मानता है और उसकी पढ़ाई रोक देता है। स्कूल लौटने पर भी आनंदा को खेती की जिम्मेदारियाँ निभानी होती हैं। कहानी ग्रामीण बालक की शिक्षा पाने की इच्छा और घरेलू दबाव के बीच संघर्ष दिखाती है।

चरण 3: सामुदायिक प्रभाव और सहयोग समझाइए गाँव में प्रतिष्ठित व्यक्तियों की बात का परिवारों पर प्रभाव पड़ता है। आनंदा और उसकी माँ दत्ता जी राव से सहायता लेते हैं; उनके हस्तक्षेप से पिता उसे विद्यालय भेजने के लिए तैयार होता है। इससे ग्रामीण समाज में व्यक्तिगत परिचय, पारस्परिक सहयोग और सामाजिक प्रभाव की भूमिका सामने आती है। ऐसे सहयोग से किसी बच्चे की रुकी हुई शिक्षा को फिर अवसर मिल सकता है।

चरण 4: निष्कर्ष 'जूझ' में ग्रामीण जीवन की तीन प्रमुख विशेषताएँ हैं: कृषि और कठोर श्रम पर निर्भरता, बच्चों की शिक्षा में पारिवारिक बाधाएँ, तथा गाँव के प्रभावशाली व्यक्तियों के सहयोग की महत्त्वपूर्ण भूमिका।

त्वरित सुझाव: प्रत्येक विशेषता के साथ आनंदा का एक प्रसंग जोड़िए: खेत का काम, पढ़ाई का रुकना और दत्ता जी राव की सहायता।

12(ख). 'सिल्वर वैडिंग' के आधार पर बताइए कि अपने निवास के निकट पहुँचकर वाई.डी. पंत को क्यों लगा कि वे किसी ग़लत जगह पर आ गए हैं। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'सिल्वर वैडिंग' में यशोधर बाबू की परंपरागत जीवन-दृष्टि और उनके बच्चों की आधुनिक जीवन-शैली का अंतर दिखाई देता है।
- घर के निकट पहुँचने का प्रसंग उनकी विवाह-वर्षगाँठ पर आयोजित अप्रत्याशित समारोह से संबंधित है।

चरण 1: घर के बाहर बदला हुआ दृश्य बताइए अपने निवास के निकट पहुँचकर वाई.डी. पंत अर्थात् यशोधर बाबू ने देखा कि वहाँ कई गाड़ियाँ और स्कूटर खड़े हैं। घर में लोगों की भीड़ तथा उत्सव जैसा वातावरण है। सामान्य दिनों के शांत और परिचित घरेलू वातावरण के स्थान पर ऐसी असामान्य चहल-पहल देखकर उन्हें आश्चर्य हुआ।

चरण 2: आयोजन से उनकी अनभिज्ञता स्पष्ट कीजिए उनके बच्चों ने माता-पिता के विवाह के पच्चीस वर्ष पूरे होने पर 'सिल्वर वैडिंग' का समारोह आयोजित किया था। यशोधर बाबू को इस आयोजन की पहले से जानकारी नहीं थी। इसलिए घर के बाहर और भीतर दिखाई देने वाली तैयारी को वे तत्काल अपने परिवार के किसी अवसर से नहीं जोड़ सके और उन्हें लगा कि वे किसी गलत जगह आ गए हैं।

चरण 3: उनकी प्रतिक्रिया का पारिवारिक संदर्भ समझिए यशोधर बाबू सादगी और पुराने संस्कारों को महत्त्व देते हैं, जबकि उनकी संतानें आधुनिक ढंग से उत्सव मनाना चाहती हैं। अतः यह पार्टी उनके सामान्य घरेलू अनुभव और अपनी जीवन-शैली से मेल नहीं खाती थी। परिचित घर का वातावरण इस तरह बदल जाना उनके अजनबीपन और चकित होने की भावना को और बढ़ाता है।

चरण 4: निष्कर्ष घर के निकट खड़े अनेक वाहन, भीड़ और उत्सव की चहल-पहल देखकर उन्हें गलत जगह पहुँचने का भ्रम हुआ, क्योंकि बच्चों द्वारा आयोजित अपनी विवाह की रजत-जयंती के समारोह की उन्हें जानकारी नहीं थी।

त्वरित सुझाव: कारण को दृश्य से जोड़िए: पहले वाहन और चहल-पहल बताइए, फिर स्पष्ट कीजिए कि यशोधर बाबू समारोह से अनजान थे।

12(ग). ऐन फ्रैंक की डायरी को एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज़ क्यों माना जाता है? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ऐन फ्रैंक की डायरी द्वितीय विश्वयुद्ध और नाजी उत्पीड़न को एक यहूदी किशोरी के अनुभवों से सामने लाती है।
- निजी अनुभूति का सच्चा विवरण इतिहास के मानवीय पक्ष का महत्त्वपूर्ण दस्तावेज़ बन सकता है।

चरण 1: इतिहास का प्रत्यक्ष मानवीय अनुभव पहचानिए यह डायरी नाजियों के अत्याचार और युद्ध के समय यहूदियों के भयपूर्ण जीवन का विवरण प्रस्तुत करती है। ऐन स्वयं अपने परिवार के साथ छिपकर रह रही थी। इसलिए उसके लिखे पन्ने केवल सुनी हुई घटनाओं का बयान नहीं, बल्कि उत्पीड़न झेल रहे लोगों के दैनिक जीवन और उनकी असुरक्षा का निकट अनुभव देते हैं।

चरण 2: बंद जीवन और मानसिक संघर्ष समझाइए डायरी में छिपे हुए लोगों की कठिनाइयाँ, पकड़े जाने का डर, अभाव, आपसी संबंध और तनाव दर्ज हैं। साथ ही ऐन के अकेलेपन, अपनी पहचान की तलाश, इच्छाओं और भविष्य की आशाओं का चित्र मिलता है। इस प्रकार पाठक समझ पाता है कि युद्ध और नस्ली घृणा का प्रभाव केवल राजनीतिक घटनाओं तक सीमित नहीं रहता; वे बच्चों के बचपन और पूरे परिवार के जीवन को बदल देते हैं।

चरण 3: सार्वभौमिक महत्त्व स्पष्ट कीजिए ऐन की सहज और ईमानदार अभिव्यक्ति उस समय की क्रूरता के बीच मनुष्य की संवेदना और जीने की इच्छा को भी बचाए रखती है। एक किशोरी की निजी कथा असंख्य पीड़ितों की व्यथा का प्रतिनिधित्व करती है। इसलिए यह रचना इतिहास की जानकारी देने के साथ हिंसा, भेदभाव और अमानवीयता के परिणामों के प्रति हमारी चेतना जगाती है।

चरण 4: निष्कर्ष ऐन फ्रैंक की डायरी युद्धकालीन यहूदी उत्पीड़न का अनुभूत विवरण, एक किशोरी के मन का संवेदनशील चित्र और मानवीय गरिमा का साक्ष्य होने के कारण महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक तथा साहित्यिक दस्तावेज़ है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में ऐतिहासिक परिस्थिति, छिपे जीवन का व्यक्तिगत अनुभव और मानवीय संदेश—इन तीनों को अलग-अलग स्पष्ट कीजिए।

13(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए: ऐन फ्रैंक की डायरी किट्टी को संबोधित कर क्यों लिखी गई होगी? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ऐन के लिए डायरी मन की बात कहने और अकेलापन दूर करने का माध्यम थी।
- किट्टी नाम देकर उसने डायरी को एक विश्वासपात्र काल्पनिक सखी का रूप दिया।

चरण 1: आत्मीय मित्र की आवश्यकता समझिए ऐन अपने आसपास लोगों के होने पर भी मन की गहरी भावनाएँ पूरी तरह साझा करने वाली सच्ची सहेली का अभाव महसूस करती थी। छिपकर रहने की बंदिशों और भयपूर्ण वातावरण में यह अकेलापन और बढ़ता था। उसे ऐसा विश्वासपात्र चाहिए था जिसके सामने वह बिना संकोच अपने दुख, इच्छाएँ और उलझनें व्यक्त कर सके।

चरण 2: किट्टी को संबोधित करने का उद्देश्य बताइए उसने अपनी डायरी का नाम किट्टी रखकर उसे काल्पनिक सखी मान लिया। किट्टी को संबोधित करते हुए लिखना घटनाओं की निर्जीव सूची बनाने के स्थान पर किसी आत्मीय से बातचीत करना बन गया। इस ढंग से ऐन अपनी निजी भावनाएँ अधिक सहजता और खुलकर लिख पाती थी तथा उसे मन का बोझ हल्का करने का सहारा मिलता था।

चरण 3: निष्कर्ष ऐन ने डायरी किट्टी को संबोधित करके इसलिए लिखी होगी कि वह उसे अपनी विश्वासपात्र सखी मानती थी, जिसके साथ मन की बातें बाँटकर अपने अकेलेपन को कम कर सके।

त्वरित सुझाव: किट्टी को कोई वास्तविक पत्र-प्राप्तकर्ता न बताइए; उसे डायरी के रूप में ऐन की कल्पित और विश्वासपात्र सखी स्पष्ट कीजिए।

13(ख). यशोधर बाबू को बच्चों की तरक़्क़ी अच्छी भी लगती है और 'समहाउ इंप्रॉपर' भी। ऐसा क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यशोधर बाबू का द्वंद्व पिता के स्वाभाविक स्नेह और पुरानी पीढ़ी के जीवन-मूल्यों के बीच का द्वंद्व है।
- बच्चों की आर्थिक सफलता उन्हें प्रसन्न करती है, पर सफलता के साथ आया उपभोक्तावादी व्यवहार और पारिवारिक दूरी उन्हें असहज करते हैं।

चरण 1: प्रसन्नता का कारण पहचानिए यशोधर बाबू ने सीमित साधनों में परिवार सँभाला है। इसलिए बच्चों का पढ़-लिखकर अपने पैरों पर खड़ा होना, अच्छी नौकरी पाना और अधिक कमाना उन्हें अच्छा लगता है। विशेषकर भूषण की ऊँची तनख्वाह उसके सफल होने का प्रमाण है। पिता होने के कारण वे संतान का उज्ज्वल भविष्य चाहते हैं और उसकी उन्नति पर संतोष अनुभव करते हैं।

चरण 2: असहजता का कारण स्पष्ट कीजिए वे सादगी, अनुशासन, स्थिर नौकरी और बड़ों के अनुभव के सम्मान को महत्त्व देते हैं। बच्चों की नई कार्य-संस्कृति, अधिक वेतन और आधुनिक रहन-सहन उनकी परिचित दुनिया से अलग हैं। बच्चे उनके तौर-तरीकों को पुराना समझते हैं और पारिवारिक निर्णयों में भी उनकी पसंद को पर्याप्त महत्त्व नहीं देते। सिल्वर वैडिंग का उत्सव और उपहारों के माध्यम से स्नेह जताने का ढंग भी उन्हें सहज नहीं लगता। इसीलिए वे आर्थिक उन्नति से खुश होकर भी उससे जुड़े बदलते मूल्यों और आत्मीयता की कमी को अनुचित-सा मानते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष बच्चों की सफलता यशोधर बाबू के पितृस्नेह को संतुष्ट करती है, लेकिन उससे जुड़ी दिखावे की प्रवृत्ति और पीढ़ियों की बढ़ती दूरी उनके संस्कारों से मेल नहीं खाती। इसी कारण तरक्की उन्हें अच्छी और 'समहाउ इंप्रॉपर' दोनों लगती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में दोनों पक्ष अलग रखें: पिता के रूप में संतान की सफलता की खुशी और पुराने मूल्यों के कारण नए रहन-सहन से असहमति।

13(ग). मुअनजो-दड़ो की सभ्यता को 'लो प्रोफ़ाइल' सभ्यता क्यों कहा गया है? 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'लो प्रोफ़ाइल' का आशय ऐसी सभ्यता से है जो समृद्ध होते हुए भी शक्ति, वैभव और आडंबर का प्रदर्शन नहीं करती।
- मुअनजो-दड़ो की पहचान राजसत्ता के भव्य स्मारकों की अपेक्षा सुव्यवस्थित नागरिक जीवन और कलात्मक सुरुचि से होती है।

चरण 1: वैभव के प्रदर्शन का अभाव बताइए मुअनजो-दड़ो में भव्य राजप्रासादों, विशाल मंदिरों या राजाओं की विराट समाधियों जैसा सत्ता और धर्म की महिमा का प्रदर्शन नहीं मिलता। वहाँ की कला में भी शासकों की वीरता और शक्ति को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाने की प्रवृत्ति प्रमुख नहीं है। अतः इस सभ्यता की महानता किसी राजा के ऐश्वर्य या भय पैदा करने वाली भव्यता पर आधारित नहीं दिखती।

चरण 2: नागरिक जीवन की समृद्धि समझाइए नगर की योजनाबद्ध सड़कें, मकान, कुएँ, स्नानागार और जल-निकासी की व्यवस्था नागरिक सुविधा तथा स्वच्छता के प्रति सजगता दिखाती हैं। मृद्भांड, मुहरें, मूर्तियाँ और अन्य कलाकृतियाँ यहाँ के लोगों की विकसित कलादृष्टि और सुरुचि का परिचय देती हैं। संपन्नता का उपयोग जीवन को व्यवस्थित और सुंदर बनाने में दिखाई देता है, केवल प्रभाव जमाने में नहीं। इस प्रकार सभ्यता में भव्य प्रदर्शन की जगह संयम और उपयोगिता का महत्त्व है।

चरण 3: निष्कर्ष सत्ता के आडंबर से दूर, नागरिक सुविधा, कला और सुरुचि को प्रधानता देने के कारण मुअनजो-दड़ो को 'लो प्रोफ़ाइल' सभ्यता कहा गया है। इसका अर्थ पिछड़ापन नहीं, बल्कि समृद्धि में भी संयम है।

त्वरित सुझाव: 'लो प्रोफ़ाइल' का अर्थ लिखकर दो प्रमाण जोड़ें: विशाल राजकीय स्मारकों का अभाव और नागरिक सुविधाओं तथा कला का विकास।

---

14. "टूटे-फूटे खंडहर, सभ्यता और संस्कृति के इतिहास के साथ-साथ धड़कती ज़िंदगी के अनछुए समयों का भी दस्तावेज़ होते हैं।" इस कथन की समीक्षा 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर कीजिए।

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पुरातात्त्विक अवशेष किसी सभ्यता की नगर-योजना, कला और सामाजिक विकास के ऐतिहासिक प्रमाण होते हैं।
- संवेदनशील दृष्टि से देखने पर उन्हीं अवशेषों में साधारण लोगों के श्रम, रुचियों और दैनिक जीवन की झलक भी मिलती है।
- 'अतीत में दबे पाँव' में ओम थानवी मुअनजो-दड़ो के खंडहरों के माध्यम से इतिहास और मानवीय जीवन का यह संबंध सामने लाते हैं।

चरण 1: कथन का आशय स्पष्ट कीजिए टूटे मकान, गलियाँ और पुरानी वस्तुएँ केवल बीते समय की निर्जीव चीजें नहीं हैं। वे बताते हैं कि उस समय मनुष्य कैसे रहता था, अपनी आवश्यकताओं को कैसे पूरा करता था और जीवन को सुंदर बनाने के लिए क्या करता था। इसलिए खंडहर सभ्यता के बाहरी विकास के साथ उन साधारण जीवन-अनुभवों का भी संकेत देते हैं जिन्हें राजाओं और युद्धों के इतिहास में पर्याप्त स्थान नहीं मिलता।

चरण 2: नगर के अवशेषों से इतिहास समझाइए मुअनजो-दड़ो की योजनाबद्ध सड़कें, पकी ईंटों के मकान, कुएँ, स्नानागार और जल-निकासी की व्यवस्था उन्नत नगर-निर्माण का प्रमाण हैं। उनसे स्वच्छता, जल की उपलब्धता और सामूहिक सुविधा के प्रति नागरिकों की सजगता प्रकट होती है। ये अवशेष बताते हैं कि हजारों वर्ष पहले भी जीवन को सुव्यवस्थित करने के लिए तकनीकी ज्ञान और सामाजिक संगठन विकसित थे। इस अर्थ में खंडहर सभ्यता और संस्कृति के विश्वसनीय ऐतिहासिक दस्तावेज़ हैं।

चरण 3: वस्तुओं में साधारण जीवन के संकेत देखिए घरों के आँगन और कमरों को देखकर लेखक का ध्यान उनमें कभी रहने वाले परिवारों की ओर जाता है। गलियाँ लोगों के आने-जाने और परस्पर मिलने के संसार का बोध कराती हैं। बर्तन दैनिक उपयोग, खिलौने बच्चों की दुनिया और आभूषण मनुष्य की सौंदर्य-रुचि के संकेत देते हैं। मुहरें और मूर्तियाँ कलात्मक कौशल की साक्षी हैं। नर्तकी की कांस्य मूर्ति विशेष रूप से उस समय की कला और जीवंत मानवीय मुद्रा का परिचय देती है। इस प्रकार पुरानी वस्तुएँ आज के दर्शक को बीते जीवन की निकटता का अनुभव कराती हैं।

चरण 4: लेखक की संवेदनशील दृष्टि का मूल्यांकन कीजिए लेखक खंडहरों को केवल पुरातत्त्व की सूचनाओं तक सीमित नहीं रखते; वे उनमें आम लोगों के श्रम और सांस्कृतिक चेतना को अनुभव करते हैं। यह अनुभव अवशेषों से उत्पन्न होता है, किसी अनाम व्यक्ति की पूरी जीवन-कथा का प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं होता। इसी अंतर को समझने से कथन की सार्थकता स्पष्ट होती है: इतिहास हमें निर्माण और व्यवस्था के तथ्य देता है, जबकि संवेदनशील निरीक्षण उन तथ्यों से जुड़े मानवीय जीवन की झलक सामने लाता है। इसलिए इन स्थलों का संरक्षण हमारी सामूहिक स्मृति का संरक्षण भी है।

चरण 5: निष्कर्ष 'अतीत में दबे पाँव' इस कथन की पुष्टि करता है। मुअनजो-दड़ो के खंडहर नगर-निर्माण और कलात्मक विकास के प्रमाण होने के साथ उन साधारण लोगों की जीवनचर्या, जरूरतों और रुचियों के संकेत भी सँजोए हैं जिनसे वह सभ्यता बनी थी। लेखक की संवेदना के कारण पत्थरों और ईंटों के बीच बीता मानवीय जीवन सजीव अनुभव बन जाता है।

त्वरित सुझाव: समीक्षा में दो स्तर जोड़ें: सड़क और जल-निकासी से सभ्यता का इतिहास समझाएँ; घर, बर्तन, खिलौने और कलाकृतियों से दैनिक मानवीय जीवन की झलक दिखाएँ।

अथवा

14. अथवा 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के आधार पर यशोधर बाबू के व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मनोहर श्याम जोशी की कहानी 'सिल्वर वैडिंग' में यशोधर बाबू का चरित्र पुरानी जीवन-दृष्टि और नई पीढ़ी की बदलती मान्यताओं के तनाव को सामने लाता है।
- चरित्र-चित्रण में व्यक्ति के स्वभाव को उसके व्यवहार, संबंधों और कथा की घटनाओं से जोड़कर स्पष्ट किया जाता है। यशोधर बाबू की सादगी, मूल्यनिष्ठा और संवेदनशीलता उनके पारिवारिक अकेलेपन के साथ दिखाई देती हैं।

चरण 1: सादगी और अनुशासन को पहचानिए यशोधर बाबू साधारण जीवन बिताने वाले, परिश्रमी और अपने कर्तव्यों के प्रति सजग व्यक्ति हैं। उन्होंने सीमित साधनों में परिवार की जिम्मेदारियाँ निभाई हैं। वे रहन-सहन में दिखावे और अनावश्यक खर्च को महत्त्व नहीं देते। विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ को आधुनिक ढंग से 'सिल्वर वैडिंग' के रूप में मनाने की तैयारी उन्हें सहज नहीं लगती। इससे उनकी सादगी के साथ नए सामाजिक व्यवहार के प्रति उनकी असहजता भी प्रकट होती है।

चरण 2: आदर्शों और संबंधों के प्रति निष्ठा समझिए किशनदा ने यशोधर बाबू के जीवन को गहराई से प्रभावित किया है। वे उनके अनुशासन, जीवन-मूल्यों और व्यवहार को आदर्श मानते हैं तथा निर्णय लेते समय उन्हें स्मरण करते हैं। अपने पहाड़ी संस्कारों, पुराने परिचितों और आत्मीय संबंधों से उनका गहरा लगाव है। उनके लिए संबंधों का मूल्य केवल आर्थिक सफलता या आधुनिक रहन-सहन से अधिक है। पुराने मूल्यों पर उनका भरोसा उन्हें नैतिक आधार देता है, पर उन्हीं मानदंडों से सबको परखना नई परिस्थितियों से उनके तालमेल को कठिन भी बनाता है।

चरण 3: पीढ़ियों के अंतर से उत्पन्न द्वंद्व बताइए उनके बच्चे आधुनिक शिक्षा, नौकरी, पहनावे और जीवन-शैली को सहज रूप से स्वीकार करते हैं। यशोधर बाबू इन परिवर्तनों के साथ तुरंत नहीं चल पाते। पत्नी का बच्चों के ढंग से समझौता कर लेना भी उन्हें अपने परिवार में अकेला अनुभव कराता है। वे बच्चों की उपलब्धियों से जुड़े हैं, फिर भी उनकी प्राथमिकताओं को पूरी तरह नहीं समझ पाते। इस प्रकार उनका चरित्र केवल परंपराप्रिय पिता का नहीं, बदलते समय में अपना स्थान खोजते व्यक्ति का भी है।

चरण 4: संवेदनशीलता और आत्मीयता की अपेक्षा स्पष्ट कीजिए यशोधर बाबू बाहर से संयमी हैं, किंतु भीतर से अत्यंत भावुक हैं। बेटे द्वारा दिया गया ड्रेसिंग गाउन इसका मार्मिक उदाहरण है। बेटे का कहना है कि वे सुबह दूध लेने जाते समय उसे पहन लिया करें। पिता को उपहार से अधिक इस आत्मीय आश्वासन की आकांक्षा है कि दूध लाने का काम अब बेटा सँभाल लेगा। यह प्रसंग दिखाता है कि वे भौतिक उपहार के पीछे स्नेह, सहभागिता और अपने प्रति चिंता खोजते हैं। परिवार के बीच रहते हुए भी उनकी भावनात्मक आवश्यकताएँ पूरी तरह समझी नहीं जातीं।

चरण 5: निष्कर्ष यशोधर बाबू सादगीप्रिय, कर्तव्यनिष्ठ, संस्कारों और संबंधों के प्रति समर्पित तथा अत्यंत संवेदनशील व्यक्ति हैं। उनकी

परंपरानिष्ठा उन्हें दृढ़ आधार देती है, किंतु परिवर्तन को सहज स्वीकार न कर पाना उनके अकेलेपन को बढ़ाता है। उनके व्यक्तित्व में पुरानी पीढ़ी की गरिमा और बदलते पारिवारिक जीवन की मार्मिक पीड़ा साथ-साथ उभरती है।

त्वरित सुझाव: यशोधर बाबू के हर गुण के साथ कथा का एक प्रसंग जोड़ें: मूल्यनिष्ठा के लिए किशनदा, पीढ़ीगत द्वंद्व के लिए वर्षगाँठ का आयोजन और संवेदनशीलता के लिए ड्रेसिंग गाउन का उपहार।